Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

**अर्हत उवाच**

छ्देण पलेतिमा पया।

**माया और मोह से ढंका हुआ प्राणी स्वेच्छा से विभिन्न गतियों में पर्यटन करता है।**

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 47 • 29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-08-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

## ज्ञानशाला में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार देने का प्रयास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, १८ अगस्त, २०२२**

युगप्रधान आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन-२०२२ के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन आचार्यश्री ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशालाएँ संचालित होती हैं और क्षेत्रीय स्तर पर सभाएँ उनके संचालन का कार्य देखती हैं। ज्ञानशाला के संचालन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है–ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण देना। ज्ञानशाला के प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएँ यह ध्यान दें कि बच्चों में कैसे अच्छे संस्कार और ज्ञान का विकास हो सके। इसके लिए बच्चों को जो भी बताएँ, उसके उच्चारण की शुद्धता का ध्यान दिया जाए। मात्रात्मक शुद्धि का भी प्रयास हो। आचार्यश्री ने प्रशिक्षिकाओं का मानो परीक्षण लेते हुए लोगस्स का उच्चारण करने को कहा। प्रशिक्षिकाओं को आचार्यश्री ने उच्चारण शुद्धि का प्रशिक्षण देते हुए कहा कि बच्चों को अच्छी सीख देने के साथ अच्छे संस्कार भी देने का प्रयास हो और प्रशिक्षिकाएँ उपासिकाएँ बनने का भी प्रयास करें, तो अच्छा हो सकता है। निरंतर ज्ञान के अर्जन का प्रयास होता रहे। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीत का संगान हुआ। मुंबई ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि किमंजला नगरी के बाहर भगवान महावीर आए हुए हैं। स्कंधक के मन में संकल्प जागा कि मैं भी भगवान महावीर के पास जाऊँ, कुछ प्रश्न भी उनसे पूछूँ। उनसे मिलना मेरे लिए हितकर होगा, इसलिए मैं वहाँ जाऊँ।

उधर भगवान महावीर ने अपने प्रमुख शिष्य भगवान गौतम से कहा कि तुम अपने पूर्व मित्र को देखोगे। गौतम ने पूछा–भगवान! कौन से मित्र को देखूँगा? उत्तर मिला कि तुम स्कंधक को देखोगे।

गौतम ने भगवान को वंदन कर पूछा कि भगवान! एक जिज्ञासा है कि स्कंधक आने वाला है, वो आपके पास साधु बनने में समर्थ है क्या? उत्तर दिया गया हाँ वो मेरे पास साधु बनने में समर्थ है। वार्तालाप चल रहा था कि स्कंधक एकदम निकट आ गया। गौतम स्वामी उठकर स्कंधक की अगवानी में जाते हैं। पास जाकर बोलते हैं कि स्कंधक तुम्हारा सुस्वागत है। मैंने सुना है कि तिंगल नाम के व्यक्ति ने तुम्हें प्रश्न पूछे थे। यह बात सही है क्या?

स्कंधक बोला–बात तो सही है। पर ये बात तो मेरे साथ उसकी व्यक्तिगत बात हुई थी, आपको इसका पता कैसे चल गया। कौन ऐसे ज्ञानी-तपस्वी हैं, जिसने इस रहस्य को जान लिया और आपको बता दिया। गौतम बोले–मेरे धर्माचार्य भगवान महावीर हैं। वे तो सर्वज्ञ हैं। वे अतीत, वर्तमान और भविष्य के विज्ञाता हैं। उन्होंने मुझे सारी बात बताई है। इसलिए मैं जानता हूँ।

स्कंधक बोला कि तुम्हारे गुरु ज्ञानी हैं, तो मैं उनसे मिलना चाहूँगा और उन्हें वंदना कर उनका सत्कार-सम्मान करना चाहूँगा। गौतम बोले–जैसे आपको सुख उपजे।

भगवान को वंदन कर स्कंधक उनकी पर्युपासना में स्थित हो जाता है। भगवान बोले–स्कंधक! तिंगल ने तुमको कुछ प्रश्न पूछे थे। ये बात ठीक है ना। उन प्रश्नों के उत्तर हैं कि मैंने लोक चार प्रकार का बताया है–द्रव्यतः, क्षेत्रतः कालतः और भावतः। द्रव्यतः सारा लोक एक ही है, इसलिए वह शांत है। क्षेत्र से लोक असंख्य कोटा-कोटि योजन लंबा-चौड़ा और असंख्य योजन परिधि वाला है। इसलिए क्षेत्रतः भी वह शांत है। एक सीमा के बाद उसका समापन है, इसलिए वह अनंत नहीं है।

कालतः लोक अनंत है। हमेशा था और हमेशा रहेगा। यह नित्य, शाश्वत और अवस्थित है, इसका कहीं अंत नहीं है। भावतः लोक में अनंत वर्ण पर्यव, अनंत गंध पर्यव, अनंत रस पर्यव, अनंत स्पर्श पर्यव, अनंत संस्थान पर्यव, अनंत गुरु-लघु पर्यव, अनंत अगुरु-लघु पर्यव है, उन पर्यवों का कोई अंत नहीं है। पर्याय अनंत है, इसलिए भावतः लोक अनंत है। दो दृष्टियों से लोक शांत है और दो दृष्टियों से लोक अनंत है। इस तरह लोक के बारे में भगवान ने स्कंधक को जानकारी दी।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में भगवान ने बताया कि लोक की तरह ही जीव हैं। द्रव्यतः जीव एक है, इसलिए वो शांत हो गया। क्षेत्रतः जीव असंख्येय प्रदेशों वाला है, आकाश के असंख्य प्रदेशों का अवगहन करके रहता है, असंख्य है, अनंत तो है नहीं इसलिए क्षेत्रतः जीव शांत है। कालतः जीव अनंत है, जीव हमेशा था, है और हमेशा रहेगा। वह ध्रुव है, नित्य है, शाश्वत है। भावतः देखें तो एक जीव में अनंत ज्ञान पर्यव है, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत और पर्यव है। इसलिए जीव भावतः अनंत है।

तीसरे प्रश्न का उत्तर है कि सिद्धि एक ही है। सिद्धशिला एक ही है। इसलिए वह द्रव्यतः एक है। क्षेत्रतः ४५ लाख योजन लंबी-चौड़ी सिद्ध शिला है। वह एक परिधि की सीमा में है, इसलिए वह शांत है। कालतः वह अनंत है। वह हमेशा थी और हमेशा रहेगी। भावतः भी सिद्धशिला में अनंत वर्ण आदि है, इसलिए भावतः भी सिद्धि अनंत है।

चौथे प्रश्न का उत्तर है कि द्रव्यतः एक सिद्ध एक ही है, इसलिए वो शांत भी है। क्षेत्रतः सिद्ध के असंख्येय प्रदेश है, इसलिए वह शांत है। कालतः सिद्ध का कभी अंत नहीं होता यह अनंत काल तक रहेगा, इसलिए वह अनंत है। पर वह आदि भी है, कभी तो वह सिद्ध बना था। भावतः भी वह अनंत होता है।

पाँचवें प्रश्न के उत्तर में भगवान ने बताया कि दो प्रकार के मरण होते हैं–बाल मरण और पंडित मरण। बाल और पंडित मरण के संदर्भ जीव का संसार में बढ़ना घटना होता है। असंयम जीवन में मरना होता है। अनेक तरह से मौत हो सकती है, बाल मरण वाले का संसार बढ़ता है। जो पंडित मरण से मरता है, उसकी संसार परंपरा कम होती है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

**खमतखामणा**

संवत्सरी के पावन अवसर पर गत वर्ष में हुई ज्ञात-अज्ञात भूलों हेतु खमतखामणा

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन एवं स्नातकोत्तीर्ण दीक्षांत समारोह

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *हमारे भीतर अनंत ज्ञान, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है। हम उसका अनुभव करने का प्रयास करें। ध्यान के द्वारा इनका साक्षात्कार किया जा सकता है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# इंद्रियों का उपयोग भोग में नहीं अपितु ज्ञान साधना में करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २१ अगस्त, २०२२**

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! इंद्रियाँ कितनी प्रज्ञप्त हैं। गौतम के नाम उत्तर कि इंद्रियाँ पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे श्रोतेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय।

आदमी के शरीर में पाँच इंद्रियाँ होती हैं और भी अनेक प्राणियों के शरीर में ये पाँचों इंद्रियाँ होती हैं। कुछ प्राणियों के चार, तीन, दो या एक इंद्रिय होती हैं। एक इंद्रिय वाले तो अनंत प्राणी होते हैं। जिनके सिर्फ स्पर्शनेन्द्रिय ही होती हैं। पाँचों स्थावर काय के प्राणी एकेन्द्रिय ही होती है।

मनुष्य, तिर्यन्च पंचेन्द्रिय, मत्स्य, देव जगत एव नारकीय जीवों के पाँच इंद्रियाँ होती हैं। ये पाँच इंद्रियाँ ज्ञान की साधना बनती है। आदमी सुनकर बहुत कुछ जान लेता है। देखकर या अन्य इंद्रियों से बहुत कुछ जान लेता है। पर दो इंद्रियाँ श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय ज्यादा ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है।

सुनने से आदमी को कितनी जानकारियाँ मिल जाती हैं। ये श्रोत-कर्ण हमारे ज्ञान का बड़ा साधन बनता है। चक्षु के द्वारा देखकर भी हम बहुत सी जानकारियाँ जान लेते हैं। कई बातें सुन लेते हैं, पर आँख से जब उनको देख लेते हैं, तो तब कन्फर्म हो जाती है। तीर्थंकर या केवलज्ञानी से कोई बात सुन ली फिर देव सहयोग से उस चीज को देख लेते हैं, तो ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

हमारे जीवन में ये दो इंद्रियाँ श्रोत और चक्षु ज्ञानवर्धन में बहुत काम आती है। आदमी को अच्छा श्रोता भी बनना चाहिए। उपयोगी या आत्मकल्याण की कोई बात कोई कहता है, तो हम सुनने का प्रयास करें। दुःखी आदमी के दुःख को भी सुनना चाहिए। उससे उसे सांत्वना मिल सकती है। सुनने के बाद उस बात पर मनन करें।

सुनते-सुनते प्रवचन देने की कला भी आ सकती है। जिनके पास श्रवण शक्ति है, उसका वो अच्छा उपयोग करें। श्रवण शक्ति का दुरुपयोग न हो। एक प्रसंग से समझाया कि पाँच कारणों से आदमी मूर्ख होता है—जो चलता-चलता खाए, जो बात बोलते-बोलते हँसे, बीती बात के बारे में सोचना, किसी पर उपकार करके उसको गिनाना, दो व्यक्ति बात करें और तीसरा बीच में चला जाए वो मूर्ख होता है।

इसी तरह आँख का भी बढ़िया उपयोग करें। आगम-शास्त्रों को हम पढ़ें। आँखों से महात्मा-चारित्रवान संत के दर्शन करें। ईर्या समिति में आँखों का उपयोग रखें तो अहिंसा की साधना हो सकती है। चक्षु से अनिमेष अनुप्रेक्षा की जा सकती है। एक बिंदु पर दृष्टि को एकाग्र रखना। आँखों का सदुपयोग हो इसके प्रति जागरूक रहें।

इन इंद्रियों को ज्ञानेंद्रियाँ कहा जाता है, पर ये भोगेन्द्रियाँ भी बन सकती हैं। श्रोत और चक्षु कामी इंद्रियाँ हैं, शेष तीन भोगी इंद्रियाँ हैं। जहाँ इंद्रियाँ ज्ञान का माध्यम बनती है, तो भोग का माध्यम भी ये बन सकती है। हम इंद्रियों का संयम करने का यथोचित्य प्रयास करना चाहिए। आत्मानुशासन को सिद्ध करने के लिए मन पर भी अनुशासन अपेक्षित है, तो वाणी, शरीर और इंद्रियों पर भी अनुशासन अपेक्षित है।

पर्युषण महापर्व भी निकट आ रहा है। जैन श्वेतांबर में इस पर्युषण का बड़ा महत्त्व है। संयम की साधना का महत्त्वपूर्ण अवसर है। यह हमारा आध्यात्मिक पर्व है। त्याग-तपस्या संयम के द्वारा इसकी आराधना करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवन में संयम, सत्य, सदाचार और करुणा-दया का अभ्यास करता है, वह व्यक्ति भाव-शुद्धि की दिशा में प्रस्थान करता है। भाव-शुद्धि का एक माध्यम है—तपस्या। वह तपस्या है—शुभ योगः तपः। मन, वचन, काया की शुभ प्रवृत्ति करना सबसे बड़ा तप है। जैन साधना पद्धति में सबसे बड़ा है—भाव शुद्धि। हमारा सकारात्मक चिंतन हो गया तो हम साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। आचार्यप्रवर का आभामंडल शुभ भावों का संचरण कर रहा है। पूज्यप्रवर के पास बैठने से शांति का अनुभव होता है।

साध्वी सुषमा कुमारी जी ने तपस्या की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष विजय सांखला पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे। उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। व्यवस्था समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

दिल्ली का बड़ा संघ श्रीचरणों में प्रस्तुत हुआ। दिल्ली संघ का मंचीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# जन्म-मरण की परंपरा को तोड़ने में व्रत साधना सहायक : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २० अगस्त, २०२२**

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है कि भंते! पृथ्वियाँ कितनी बताई गई हैं। इसके जवाब में भगवान ने कहा किपृथ्वियाँ सात प्रज्ञप्त हैं, रत्न प्रभा, शर्करा प्रभा, बालुका प्रभा, पंक प्रभा, धूमप्रभा, तमः प्रभा, महातमः प्रभा। प्रश्न किया गया कि क्या सब प्राणी पहले वहाँ उत्पन्न हुए हैं? हाँ गौतम! अनेक बार अथवा एक बार उत्पन्न हो गए।

जैन दर्शन में अनंत जीव बताए गए हैं। प्रत्येक जीव के अनंत-अनंत जन्म-मरण हो चुके हैं। जन्म-मरण का चक्र संसारी जीवों के चलता रहता है। जो सिद्ध हुए हैं, उन्होंने भी पहले अनंत जन्म-मरण किए हैं, पर अब वे जन्म-मरण से मुक्त हो गए हैं। जन्म है, तो मृत्यु का होना सुनिश्चित है।

पर्युषण पर्व धर्माराधना का उत्तम अवसर है। पर्युषण पर्व जो वर्ष में एक बार आता है, उसके प्रति आध्यात्मिक उत्साह भी देखने को मिलता है। तपस्याओं का क्रम भी चलता है। धर्म एक सीमा तक तो हमेशा ही करना चाहिए। कल की सोचते हो तो आज ही कर लो। कल कर लोगे, यह बात करने का हक तीन मनुष्यों को है। एक तो वह जो कहता है कि मेरी मौत के साथ दोस्ती हो गई है। दुनिया में स्वार्थ ज्यादा चलता है।

दूसरा आदमी कहता है कि मैं दौड़ने में तेज हूँ। मौत इधर से आती दिखेगी, मैं उधर से दौड़ जाऊँगा। मौत मुझे पकड़ ही नहीं पाएगी। तीसरा आदमी वह है, जो यह जानता है कि मैं तो कभी मरूँगा ही नहीं। मैं तो अमर हूँ। पर ऐसा कभी होता नहीं है। मृत्यु तो निश्चित है।

भगवती सूत्र का कथन है कि सारे प्राणी अनेक बार अथवा अनंत बार पैदा हो चुके हैं। कोई-कोई जीव वनस्पतिकाय निगोद में ही रहकर मनुष्य बनता है और मोक्ष में चला जाता है। जैसे मरुदेवा माता का जीव। परंतु वनस्पतिकाय में तो अनंत बार जन्म-मरण कर लिया। बार-बार की जन्म-मरण की परंपरा से छुटकारा कैसे मिले।

इस जीवन का संभवतया सबसे बड़ा लक्ष्य यह हो सकता है कि मैं मोक्ष को प्राप्त करूँ। मोक्ष के समान दूसरा कोई बड़ा लक्ष्य होना मुश्किल है। मोक्ष प्राप्ति की दिशा में खूब आगे बढ़ूँ। साधु हो या श्रावक मोक्ष की साधना करने वाला है। देश विरत भी जितनी तपस्या या त्याग करता है, मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

बार-बार इन सात पृथ्वियों में पैदा होने की परंपरा से छुटकारा मिल जाए इसके लिए हमारी धर्म की साधना आराधना है। संयम की साधना है। हम साधु या श्रावक हैं बने हैं, इसकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में यह बात है कि मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ूँ। तिर्यंच श्रावक भी हो सकते हैं, जो मरकर आठवें देवलोक तक जा सकते हैं।

साधु-साधुत्व में और श्रावक-श्रावकत्व में आगे बढ़ें। श्रावक १२ व्रत सुमंगल साधना स्वीकार करें। जन्म-मरण की परंपरा को तोड़ने के लिए साधना सहायक बनती है। आत्मा निर्मल बने और कभी जन्म-मरण की परंपरा का विच्छेद हो जाए।

परम पावन ने कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि भिवानी में तेरापंथी जैन तो कम थे। जैनेत्तर लोग बहुत हैं। दीक्षा का विरोध कर रहे हैं। पर कालूगणी

का भी प्रभाव है। दीक्षा रोकने का प्रयास कर रहे हैं। तेरापंथी विरोध को रोकने का चिंतन कर रहे हैं। दीक्षा की पहली रात में विरोधी लोग अपनी बड़ी सभा आयोजित कर रहे हैं। नारेबाजी हो रहे हैं। दीक्षा कभी नहीं होने देंगे। न सुख से सोएँगे, न सुख से सोने देंगे। अनेक तरह की योजनाएँ बन रही हैं कि येन-केन दीक्षा को रोकना है। दीक्षार्थियों को ही उठाकर ले जाएँगे। जैसे आकाश में फूल नहीं खिल सकता, वैसे ही भिवानी में दीक्षा नहीं होने देंगे।

रात की सभा में एक घटना घटित हो रही है। ऐसा लगा कि आकाश में कोई सफेद-सफेद चीज गिर रही है। कोई कहता है कि सफेद बच्छड़ा सा है, कोई कहता है कि ये तो मारनी गाय है। कोई कहता है नहीं-नहीं ये तो कोई ओपरी छाया आई है। भागो-भागो की आवाज से पूरी सभा में भगदड़ मच जाती है। सारे लोग भाग जाते हैं। सभा स्थल पूरा खाली हो जाता है। रड़भड़ते अपने घर की ओर भागते हैं। अंधेरे में गौड़े फूट जाते हैं। एक-दूसरे पर गिर जाते हैं। किसी की पगड़ी रह गई, किसी की चप्पल रह गई। **( शेष पृष्ठ ३ पर)**

# श्रमणों की उपासना करने वाला होता है श्रमणोपासक : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २२ अगस्त, २०२२**

अध्यात्म के अलौकिक पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन आगम वाचना करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर साधना कर तीर्थ की स्थापना कर तीर्थंकर के रूप में स्थापित हुए। उनके अनेक साधु-साध्वियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ हुए। धर्म का प्रचार हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में धर्म को पालने वाले लोग रहते थे।

उस तुंगिका नगरी की विशेषता थी कि वहाँ अनेक श्रमणोपासक रहते थे। श्रमणों की उपासना करने वाला श्रमणोपासक होता है। आज कहीं-कहीं श्रावक तो है, पर साधु नहीं पहुँच पाते हैं, वहाँ समणियाँ, मुमुक्षु बहनें व उपासक श्रेणी जाती हैं। उपासक-उपासिकाएँ जितने क्षेत्रों की पर्युषणाराधनाएँ करते हैं, कराते हैं, उनके सामने तो साधु-साध्वियों, समणियों, मुमुक्षु बहनों की संख्या कम होती है।

संयम की साधना करने वालों को नौ तत्त्व की जानकारी होनी चाहिए। दीक्षा लेने वालों के लिए पारमार्थिक शिक्षण संस्था एक ट्रेनिंग सेंटर है। तुंगिया नगरी के श्रावकों ने तत्त्व ज्ञान को आत्मसात किया था। ज्ञानवत्ता उनमें थी। उनका जीवन श्रद्धायुक्त था। उनकी श्रद्धा असहज थी। निर्ग्रन्थ प्रवचन में अटूट श्रद्धा थी। देवता भी उनको श्रद्धा से विचलित नहीं कर सकते थे। वीतराग प्रवचन सार्थ है। इतनी श्रद्धा होना धन्य है।

वे घर के दरवाजे खुले रखते थे कि जब साधु गोचरी के लिए आ जाए। वो धर्म-निर्ग्रन्थ प्रवचन के प्रति अनुराग भाव रखने वाले थे। श्रावक कैसा होना चाहिए पर तुंगिया नगरी के श्रावकों से सीखना चाहिए। वे आदर्श श्रावक थे।

पूज्यप्रवर का आज केशलोचन हुआ है। साधु-साध्वियाँ एवं श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर की निर्जरा में सम्मिलित होते हुए पूज्यप्रवर को वंदना की। पूज्यप्रवर ने भी रत्नाधिक मुनि धर्मरुचि जी को वंदना की। पूज्यप्रवर ने अपनी लोच के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की। लोच करना शूरवीरता-शौर्य का काम है। लोच में झपकी आ जाए तो लोच सफल है। पूज्य गुरुदेव तुलसी को नींद आ जाती थी। यह गोल्ड मेडल जैसी बात हो जाती है। संवत्सरी से पहले-पहले बाल हटने चाहिए।

बाल एक तरह का शृंगार है। साधु के विभूषा न हो। जीव उत्पन्न होने से हिंसा भी हो सकती है। मेरी लोच की दृष्टि से निर्जरा रूप में साधु-साध्वियों व समणियों को एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय कर सकते हैं। मुमुक्षु बाइयाँ व श्रावक-श्राविकाएँ चाहें तो सात-सात सामायिक रोजमर्रा से अलग कर सकते हैं।

हमारे यहाँ कई-कई लोच करने वाले ख्यातनामा हैं। लोच करना भी एक सेवा है। सबमें लोच करने की दक्षता रहे। अगवानी विशेष ध्यान रखें। लोच सारे कर सकें वो कला उनमें हो।

हमारे सामने पर्युषण महापर्व का प्रसंग है। २४ अगस्त से महापर्व का शुभारंभ होने जा रहा है। कार्यक्रम की प्रेरणा दी। करणीय कार्य की जानकारी दी। साधु-साध्वियों को द्रव्य सीमा की प्रेरणा दी। पर्युषण यहाँ व बाहर सभी मनाएँ, तपाराधना होती रहे।

मुनि दिनेश कुमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए तपस्या एवं जप की प्रेरणा दी। प्रज्ञा भूतोड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

## जन्म-मरण की परंपरा को तोड़ने में व्रत...

**(पृष्ठ २ का शेष)**

पहली रात में क्या पता क्या घटना हो जाती है। कालूगणी का पुण्य था जो दीक्षा होनी थी और हो भी गई। कोई दिव्य शक्तियाँ भी होती है, जो दीक्षा को रोकना नहीं चाहती है। घटना जो भी घट गई। दीक्षा का रास्ता साफ हो गया और अगले दिन बाजार में बिना किसी अवरोध के दीक्षाएँ हो गई। बहुत भारी संख्या में जनसभा उपस्थित है।

विरोधियों ने सोचा कि हमारी योजना तो फैल हो गई, फिर भी वे शांत नहीं बैठते हैं। विरोधी लोग किसी को साधु कपड़ा पहनाकर कालूगणी के पास आते हैं। पर कालूगणी सभी को शांत रहने का उपदेश देते हैं। उस चातुर्मास में भिवानी के श्रावक द्वारकादास जी ने चार महीने तक अपनी दुकान नहीं खोली। कपड़े का व्यापार था। माल सारा गोदाम में भरा था। चतुर्मास के बाद कालूगणी विहार कर देते हैं। द्वारकादासजी उसके बाद दुकान खोलते हैं, तो कपड़े में दुगुनी, तिगुनी तेजी आ जाती है। गुरु सेवा का प्रसाद हाथोहाथ मिल जाता है। द्वारकादासजी हर वर्ष पूरे परिवार के साथ दो बार सेवा करते थे। कालूगणी की भी उन पर कृपा थी। थली की ओर विहार हो रहा है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि राजकुमार जी ने तपस्या की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## ज्ञानशाला में ज्ञान के साथ अच्छे...

**(प्रथम पष्ठ का शेष)**

पंडित मरण-अनशन भी दो प्रकार का होता है। स्कंधक को अपने प्रश्नों का समाधान मिल गया। स्कंधक बोलता है—भगवान मैं आपसे प्रभावित हूँ। मैं केवली प्रज्ञप्त धर्म आपसे सुनना चाहता हूँ। भगवान विशाल परिषद में स्कंधक को धर्म बताते हैं। स्कंधक बड़ा खुश होकर भगवान को वंदन कर बोलता है कि मैं निर्गन्थ प्रवचन में श्रद्धा, प्रतीती और अभ्युथान करता हूँ। आप जो कह रहे हैं, वो सही है।

भगवान यह संसार जल रहा है। इस संसार में दुःख है, बुढ़ापा है, मौत है। स्कंधक बोला भगवान मैं आपके संघ में दीक्षा लेना चाहता हूँ। भगवान उसे दीक्षा प्रदान कराते हैं। उसे शिक्षा प्रदान कराते हैं। उसके मन में तपस्या की भावना भी जागृत होती है। यह भगवती सूत्र में आया है कि किस तरह अन्य परंपरा का संन्यासी भगवान के पास साधु बन गया।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि हरियाणा में सैकड़ों लोग गुरुदेव के साथ हैं। लोगों में धर्म की भावना जागृत हो रही है। अनेक गाँवों का प्रवास करवाया है। मानो हरि हरियाणा में पधार गए हैं। लोग दर्शन कर रुपया-नारियल धाम रहे हैं। गुरुदेव हरियाणा की धर्म की दृष्टि से हराभरा बना रहे हैं। हरियाणा तेरापंथ की राजधानी हांसी पधार जाते हैं।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि जीवन मूल्यवान है। हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है। हम मूल्यवान जीवन को अच्छा बनाएँ। शरीर इसका माध्यम होता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तीन प्रकार के शरीर बताए हैं—स्थूल शरीर, यश शरीर और धर्म शरीर। धर्म शरीर का पोषण करना सर्वाधिक आवश्यक है। उसके लिए कषायों का उपशमन करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## क्षमापना दिवस पर

● मुनि विजय कुमार ●

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु में,
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।
मैत्री का यह मंत्र सुनहरा, आओ मिल जुल क्षमा करें,
मनोमलिनता दूर हटादें, कुंदन बनकर हम निखरें।। स्थायीपद।।

आत्म तुल्य समझें हम सबको कोई नहीं पराया है,
वसुधा ही परिवार हमारा संतों ने बतलाया है,
करुणा का बादल बन बरसें, मनुज मात्र की पीर हरें, मनोमलिनता।।१।।

जो झुकते औरों के आगे दूजे खुद झुक जाते हैं,
अपनी पकड़ छोड़ते हैं जो सबको निजी बनाते हैं,
क्षमाशील बन बिना नांव के भव सागर को शीघ्र तरें, मनोमलिनता।।२।।

बढ़ती-चढ़ती लख औरों की ईर्ष्या-द्वेष नहीं लाएँ,
वैर विरोध करे यदि कोई वहाँ उपेक्षा दिखलाएँ,
सद्गुण सुमनों की मनमोहक महक धरा पर नित बिखरे, मनोमलिनता।।३।।

स्थानकवासी-तेरापंथी शाखाएँ सब जुदा-जुदा,
(और दिगंबर-मूर्तिपूजक शाखाएँ सब जुदा-जुदा)
महावीर की हैं संतानें मूल रहा है एक सदा,
'विजय' परस्पर मिलें प्रेम से, मानवता का घाव भरें, मनोमलिनता।।४।।

**लय : क्या कहना ऐसे लोगों का---**

## 'दिल्ली में तेरापंथ का विकास' पुस्तक का लोकार्पण

**दिल्ली।**

दिल्ली के अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के सभागार में एक भव्य कार्यक्रम में 'दिल्ली में तेरापंथ धर्मसंघ का विकास' शीर्षक से ऐतिहासिक संकलन विजयराज सुराणा के संपादन में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। लोकार्पण समारोह में पत्रकार वेद प्रताप वैदिक सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर वरिष्ठ श्रावक शासनसेवी कन्हैयालाल पटावरी व दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपने-अपने उद्गारों में दिल्ली क्षेत्र में तेरापंथ के विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। मंगलाचरण तेमम अध्यक्ष मंजु जैन व अन्य बहनों ने किया। लोकार्पण के अवसर पर दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल बैद, गोविंद राम बाफना, जोधराज बैद, समाज भूषण मांगीलाल सेठिया के अलावा संपतमल नाहटा, पुखराज सेठिया, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, जितेंद्र बांठिया, बाबूलाल दुगड़ आदि अनेक व्यक्ति उपस्थित थे। सहयोगी के रूप में सुरेश राज सुराणा, रचनात्मक मंच, ओसवाल समाज व मैं भारत हूँ फाउंडेशन के विजय कुमार जैन के प्रति आभार व्यक्त किया गया। संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। इस अवसर पर तेयुप की टीम ने १७ सितंबर को रक्तदान के बैनर का (एमबीडीडी) लोकार्पण करवाया।

## श्री भक्तामर स्तोत्र कार्यशाला का आयोजन

**कानपुर।**

श्री भक्तामर स्तोत्र कार्यशाला का आयोजन साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि भक्तामर स्तोत्र जैन धर्म का महान प्रभावशाली स्तोत्र है। इस स्तोत्र की रचना आचार्य मानतुंग ने की थी। यह स्तोत्र जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान को समर्पित है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि क्रुद्ध नरपति द्वारा आचार्य मानतुंग को बलपूर्वक पकड़कर ४८ तालों के अंदर बंद करवा दिया गया था। उस समय धर्म की रक्षा और प्रभावना हेतु आचार्यश्री ने भगवान आदिनाथ की इस भक्ति स्तुति की रचना थी। साध्वीश्री जी ने संपूर्ण भक्तामर स्तोत्र का सभा के समक्ष उच्चारण किया तथा उसकी अर्थ सहित व्याख्या की। साध्वीश्री जी ने यह भी कहा कि हम सबको भक्तामर स्तोत्र को याद करने का संकल्प करना चाहिए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# महिला मंडल के विविध आयोजन

## आजादी का अमृत महोत्सव

**उधना।**

तेमम द्वारा आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वज वंदन का आयोजन हुआ। महामंत्री मधु देरासरिया व अभातेमम सदस्या जयंती सिंघी की विशेष उपस्थिति रही। सर्वप्रथम देशभक्ति नारों के साथ सर्कल के चारों ओर रैली का रूप लेते हुए महामंत्री मधु देरासरिया द्वारा राष्ट्रगीत के साथ ध्वज वंदन को सलामी दी। महिला मंडल अध्यक्षा जसु बाफना ने सभी का स्वागत किया।

उधना सभा निवर्तमान मंत्री जवरीमल दुगड़ व तेयुप अध्यक्ष सुनील चंडालिया ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दी। अभातेयुप से अरुण चंडालिया, अर्पित नाहर, उधना सभा, परिषद, महिला मंडल के पदाधिकारी, सदस्यगण, किशोर मंडल, कन्या मंडल की टीम सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

दूसरे चरण में तेरापंथ भवन में साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के द्वारा ध्वज वंदन कार्यक्रम की शुरुआत हुई। संगठन मंत्री दिनेंद्र चंडालिया एवं पदाधिकारीगण तथा सदस्यों की उपस्थिति रही। साध्वी जिज्ञासाप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया।

ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों द्वारा सुंदर प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल प्रभारी नीलम डांगी, कन्या मंडल संयोजिका उन्नति बाफना व आभार किशोर मंडल प्रभारी योगेश दुगड़ ने किया।

## जानें, समझें और करें प्रतिक्रमण

**जोरावरपुरा।**

अभातेमम द्वारा निर्देशित अगस्त माह की रूपांतरण शिल्पशाला **जानें, समझें और करें प्रतिक्रमण कार्यशाला** का आयोजन साध्वी सूरजप्रभाजी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के साथ की गई। साध्वी डॉ० लावण्ययशा जी ने समझाया कि हमें किस प्रकार मिच्छामि दुक्कड़म बोलना चाहिए। ४८ मिनट के प्रतिक्रमण से व्यक्ति अपने पूरे दिन के पाप से निवृत्त हो जाता है।

कार्यशाला का समापन मिच्छामि दुक्कड़म की गीतिका के साथ हुआ। महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने आभार ज्ञापन किया।

## दंपति शिविर का आयोजन

**जोधपुर।**

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेयुप एवं महिला मंडल के तत्त्वावधान में दंपति शिविर का आयोजन किया गया। मंगलाचरण साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने सुमधुर गीत से किया। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन ने किया। साध्वी संबोधयशा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि दंपति का अर्थ होता है पति-पत्नी का जोड़ा। एक चक्के से गाड़ी नहीं चल सकती एक तार से बल्ब नहीं जल सकता। एक व्यक्ति से सृष्टि का संचालन नहीं हो सकता। साथी के साथ कैसे जीएँ? संबंधों को मधुर कैसे बनाएँ? दाम्पत्य जीवन को सुखी कैसे बनाएँ? इसके कुछ सूत्र बताए।

साध्वी सुमंगला जी ने सकारात्मक दृष्टिकोण विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विनोद सुराणा ने किया।

## रूपांतरण कार्यशाला का आयोजन

**जसोल।**

अभातेमम के निर्देशन में तेमम व कन्या मंडल के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी के सान्निध्य में व मंडल अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में रूपांतरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी श्रुतप्रभाजी ने एवं शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मंत्री ममता मेहता ने आभार ज्ञापन किया। कन्या मंडल सह-संयोजक कुनिका बाघमार ने कार्यशाला का संचालन किया।

## कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत बेंच का लोकार्पण

**उधना।**

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा कन्या सुरक्षा योजना के तहत मधु देरासरिया की अध्यक्षता में ३ बेंच का लोकार्पण किया गया। जिसमें अभातेमम निवर्तमान अध्यक्षा पुष्पा बैद, सहमंत्री निधि सेखानी एवं गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना की उपस्थिति रही।

महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। महिला मंडल अध्यक्ष जसू बाफना ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में पीएसी मेंबर छोटू भाई पाटिल ने अपनी शुभकामना प्रेषित की। नरेंद्र सिंह स्टेशन मैनेजर, रंजन कुमार सहित अनेक सूरत रेलवे अधिकारी उपस्थित रहे।

स्थानीय सभा अध्यक्ष बसंती लाल नाहर तथा तेयुप अध्यक्ष सुनील चंडालिया ने शुभकामनाए प्रेषित की। महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया एवं अभातेयुप एटीडीसी प्रभारी अर्पित नाहर, संजय बोथरा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री सुनीता चोरड़िया एवं आभार कार्यसमिति सदस्य प्रज्ञा कच्छारा ने किया।

## कन्या युवती प्रशिक्षण शिविर

**कटक।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में कन्या युवती प्रशिक्षण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। जिसमें ८५ कन्या युवती बहनों ने भाग लिया। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय समाज में पवित्रता का प्रतीक है—कन्याएँ। कन्याएँ समाज के भविष्य का आधार है। उन्होंने आगे कहा कि बदलते परिवेश में कन्या युवतियाँ अपने चरित्र पर दाग न लगने दें। शिक्षा वरदान बने अभिशाप न बने, यह सबको ध्यान रखना है। अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति का ध्यान रखना है। मुनिश्री ने तत्त्वज्ञान आदि के बारे में बताया। मुनि परमानंद जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कन्या मंडल की संयोजिका प्रियंका बोथरा, शिखा सेठिया, उषा चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

## कन्या सुरक्षा सर्किल पर ध्वजारोहण

**सरदारपुरा।**

आजादी के अमृत महोत्सव पर आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में तेमम, सरदारपुरा द्वारा मुदित मेंशन स्थित कन्या सुरक्षा सर्किल एवं जेडीए स्थित कन्या सुरक्षा पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। झंडारोहण के बाद सभी के द्वारा राष्ट्रगान का संगान किया गया।

इस अवसर पर महिला मंडल पदाधिकारियों के साथ तेरापंथ सभा, सरदारपुरा, अध्यक्ष सुरेश जीरावला, मंत्री महावीर चोपड़ा, पूर्व अध्यक्ष उम्मेद सिंघवी आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

## रूपांतरण शिल्पशाला प्रतिक्रमण

**कांटाबाजी (ओडिशा)।**

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में रूपांतरण शिल्पशाला का प्रतिक्रमण आधारित कार्यशाला महिला मंडल द्वारा आयोजित हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने हमें जो मार्ग बताया वह है मुक्ति का। दो रास्ते हैं इसमें एक है मुक्ति की ओर ले जाने वाला जिसमें जन्म-मरण का चक्र कम होते-होते मुक्ति जल्दी हो जाती है। दूसरा जन्म-मरण को बढ़ाने वाला उससे मोक्ष दूर हो जाता है। मोक्ष में शाश्वत सुख है। सभी प्राणी सुख चाहते हैं वास्तविक सुख मिलता है मोक्ष में।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि प्रतिक्रमण है आत्मशुद्धि की प्रक्रिया है। अपने मन, भाव एवं आत्मा को पवित्र बनाने के साथ हलुकर्मी करने की साधना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। सुनिता एन ने विषय प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन जयमाला छापड़िया ने किया। आभार ज्ञापन वंदना अग्रवाल ने किया।

## ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन

**हैदराबाद।**

अभातेमम के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन गर्वनमेंट हाईस्कूल में किया गया।

स्कूल के प्रिंसिपल ने सभी का स्वागत करते हुए स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदीप सुराणा, महिला मंडल हैदराबाद अध्यक्ष अनीता गीडिया, मंडल सदस्या बोलारम महिला मंडल अध्यक्षा दमयंती सुराणा, मंडल सदस्याएँ, स्कूल के प्रिंसिपल, छात्र-छात्राएँ, अध्यापिकाओं के साथ ध्वजारोहण राष्ट्रीय गीत के संगान के साथ किया। मुख्य अतिथि ने अपना वक्तव्य दिया। स्कूल में उपस्थित सभी बच्चों को चॉकलेट वितरित किए गए।

## वन मिनट प्रतियोगिता का आयोजन

**कांटाबाजी।**

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य एवं मुनि कुमुद कुमार जी की प्रस्तुति में तेमम द्वारा वन मिनट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हमें अन्य विकास के साथ जीवन में ज्ञान का विकास भी करना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उठाया गया कदम जीवन एवं संसार की वास्तविकताओं से परिचित करा देता है। जीवन का यथार्थ स्वरूप समझने का भाव भीतर में रहना चाहिए। भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत अनावश्यक पाप से बचाते हैं। प्रतियोगिता ज्ञान के विकास के लिए होती है।

कन्या मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। मुनि कुमुद कुमार जी ने प्रतियोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। समय पालक की भूमिका अमित जैन ने पूर्ण की। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष बॉबी जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन स्मिता जैन एवं बॉबी जैन ने किया।

## प्रश्नोत्तरी कार्यशाला का आयोजन

**राजराजेश्वरी नगर।**

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में महिला मंडल, राजराजेश्वरी नगर द्वारा २५ बोल पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा महाश्रमण अष्टकम् मंगलाचरण से हुआ। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी अमितरेखाजी ने पच्चीस बोल का विश्लेषण किया एवं तत्त्व की जानकारी दी। बहनों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। साध्वी अमित रेखा जी द्वारा बनाई २५ बोल पर आधारित प्रश्न-पत्र बहनों में वितरण किया। प्रतियोगिमा में ३० बहनों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान पर नीतू बाफना, द्वितीय स्थान पर सरोज आर बैद रही। कार्यशाला का संचालन मंत्री सीमा जैन ने किया।

## चलें गाँव की ओर

**राउरकेला।**

तेरापंथ महिला मंडल, प्रोजेकट 'चलें गाँव की ओर' के अंतर्गत शिवाजी मार्ग में स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर स्कूल में कई सालों से छात्रवृत्ति देते आ रहे हैं। छात्रवृत्ति उनको दी गई जो पढ़ाई में रुचि रखते हैं, लेकिन फीस देने में असमर्थ हैं। द्रोपदी जैन, बिनीता जैन तथा खुशबू जैन ने छात्रवृत्ति देने के लिए अनुदान स्वरूप धनराशि दी।

मंडल अध्यक्ष सरोज गोलछा ने उन्हें आश्वासन दिया कि आगे भी यदि जरूरत पड़ी तो महिला मंडल यथासंभव सहयोग देगी। स्कूल के प्रधानाचार्य ने मंडल के इस कार्य की सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस प्रोजेक्ट की प्रमुख कनक बोथरा के साथ उपाध्यक्ष सरिता कोचर, सहमंत्री कविता डागा, निवर्तमान अध्यक्ष पुनीता बोथरा और स्नेहलता चोरड़िया उपस्थित थी।

✦ *आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# अभिनंदन एवं मंगलभावना कार्यक्रम

**अररिया कोर्ट।**

दीक्षार्थी मुमुक्षु दीक्षा नाहटा का अभिनंदन व मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभिनंदन के क्रम में सुबह प्रभात फेरी निकाली गई।

दीक्षार्थी मुमुक्षु दीक्षा नाहटा विराटनगर प्रवासी राकेश सुषमा नाहटा की पुत्री है, जो आगामी ६ सितंबर को छापर में आचार्यप्रवर के करकमलों से दीक्षित होगी।

मंगलभावना कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण द्वारा खुशी छाजेड़ ने किया। अभिनंदन एवं मंगलभावना कार्यक्रम में नेपाल, बिहार, झारखंड जैन तेरापंथी सभा के अध्यक्ष भैरूदान भूरा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अजय बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष भंवरलाल बेगवानी, अभातेयुप के पूर्व उपाध्यक्ष अमित नाहटा सहित अनेक पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुति एवं ननिहाल पक्ष ने अभिनंदन गीत के द्वारा अपनी भावना व्यक्त की।

मुमुक्षु दीक्षा नाहटा ने बताया कि हर व्यक्ति उसी फील्ड में इन्वेस्ट करना चाहता है, जहाँ उसे स्ट्रांग रिटर्न मिलता है। उन्होंने जीवन की नश्वरता को पहचान लिया, जान लिया कि यह धन-दौलत माया क्षणभंगुर है, जो हमारे साथ नहीं जाएगी, हमारे साथ अगर कुछ जाएगा तो वह धर्म है, संयम है।

आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री राजू दुधेड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की अध्यक्षा ज्योति बोथरा ने किया।

# पचरंगी तप अभिनंदन एवं फ्रेंड्स समिट का आयोजन

**कोटा।**

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन गुलाबबाड़ी में फ्रेंड्स समिट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जीवन रथ का रथ मजबूत पहियों पर टिका हुआ है। रिश्तों में जहाँ आत्मीयता, मधुरता, अपनापन, सामंजस्य व सौहार्द के भाव होते हैं, वहाँ जीवन का रथ तेज गति से दौड़ता है।

साध्वी सुधाप्रभाजी ने मित्र कैसा हो विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जिसमें छः 'P' वाले गुण हों—पॉजिटिव एटिट्यूट हो, प्रोग्रेसिव हो, परपजफुल हो, पीसफुल हो, पेशेंश हो, प्रेजेंस ऑफ माइंड हो, इन गुणों से समवेशी को मित्र बनाएँ। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने तीर्थंकर स्तुति का सुमधुर संगान किया।

साध्वीवृंद ने पचरंगी तप करने वालों की अनुमोदना में गीत की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, वर्षा हीरावत ने तप अनुमोदना की। युवती मंडल ने मंगल संगान किया। मंत्री धर्मचंद जैन ने भावाभिव्यक्ति दी। सभा की ओर से तपस्वियों का उपरना द्वारा बहुमान किया गया।

# दंपति कार्यशाला का आयोजन

**उत्तर हावड़ा।**

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में 'दंपति जीवन की संपति' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग ६५ दंपति युगल ने भाग लिया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जिंदगी तीन पेज की है—'आदि-अंत' हमारे हाथ में नहीं, मध्य हमारे हाथ में है। मध्य की जिंदगी में लाइफ पार्टनर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। दोनों को दो पहियों के समान माना है, एक भी खराब हो तो गाड़ी नहीं चल पाती। दांपत्य जीवन का आभूषण सहिष्णुता एवं समर्पण है।

साध्वी सुधांशुप्रभाजी ने अपने विचार रखे। पूर्वांचल एवं दक्षिण कोलकाता कपल्स ने गीत की प्रस्तुति दी। काकुड़गाच्छी महिला मंडल ने नाट्य प्रस्तुति दी। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कई जिज्ञासाओं को समाहित किया। कार्यक्रम का संचालन रमन पटावरी एवं सुधा बोथरा ने किया।

## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

| | |
|---|---|
| ✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| ✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद | 11,00,000 |
| ✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| ✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| ✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| ✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| ✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| ✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर | 5,00,000 |

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

## नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

**सूरत।**

गोगुंदा निवासी, सूरत प्रवासी राकेश कोठारी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से मनीष कुमार मालू, अरविंद बाफना ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिक जनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप के सचेतक गौतम दफ्तरी ने कोठारी परिवार का आभार ज्ञापन किया तथा मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

## नूतन गृह प्रवेश

**विजयनगर।**

चाडवास निवासी, बैंगलोर प्रवासी सुशील बच्छावत के नूतन गृह प्रवेश के कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से करवाया गया। कार्यक्रम में परिषद के विकास बांठिया एवं धीरज भादानी ने संस्कारक की भूमिका निभाई।

बच्छावत परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा बच्छावत परिवार को मंगलभावना पत्र एवं मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन जैन संस्कार विधि प्रभारी धीरज भादानी ने किया।

## नामकरण संस्कार

**जयपुर।**

सोनाली-रवि कुमार जैन की सुपुत्री सरिता-पवन कुमार जैन की सुपौत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक सौरभ जैन ने विधि विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा किया।

तेयुप के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, सदस्य कुलदीप बैद सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

## विवाह संस्कार

**जयपुर।**

अजय जैन के सुपुत्र अपूर्व जैन का विवाह संस्कार नरेश बांठिया की सुपुत्री प्रियंका जैन बांठिया के साथ हुआ। संस्कारक सुनील बोथरा, सौरभ जैन ने विवाह की सभी रश्में मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि जैन विधि से संपन्न करवाई।

तेयुप, जयपुर के मंत्री अविनाश छाजेड़, जैन संस्कार विधि संयोजक श्रेयांस बैंगाणी की उपस्थिति में दोनों परिवारों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

## नूतन गृह प्रवेश

**पर्वत पाटिया।**

गंगाशहर निवासी, पर्वत पाटिया (सूरत) प्रवासी माणकचंद एवं सरोज देवी पुगलिया के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक रवि मालू एवं पवन बुच्चा ने नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

कमल कुमार पुगलिया ने पधारे हुए संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया। परिषद की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

## नूतन गृह प्रवेश

**सूर्यनगर, गाजियाबाद।**

पवन-जयश्री डागा सूर्यनगर, गाजियाबाद प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा, हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक हेमराज राखेचा ने डागा परिवार को शुभकामना देते हुए तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से डागा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# रक्षाबंधन कार्यशाला के आयोजन

## विशाखापट्टनम्

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व का कार्यक्रम मनाया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति त्योहारों की संस्कृति है। उसमे रक्षाबंधन भाई-बहनों का पवित्र त्योहार है। इस पर्व से यह संदेश ग्रहण करें कि रिश्तों के धागों को मजबूत बनाना है।

राज्यसभा सांसद नरसिम्हाराव ने कहा कि आज मुझे दीप मुनि जी के दर्शन कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। जैन समाज अच्छा समाज है हर सेवा कार्य में वह आगे रहता है।

सभा की ओर से सभा अध्यक्ष चंपालाल डूंगरवाल, गुलाबसिंह सेठिया एवं अन्य गणमान्यजनों ने सांसद नरसिम्हा राव का दुपट्टा, साहित्य आदि से सम्मान किया। भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजकुमार शर्मा के सहयोग से यह कार्य संभव हुआ।

## हैदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य तथा अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। संस्कारक आशीष दक, राहुल गोलछा, प्रमोद भंडारी, जितेंद्र बैद ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि तेयुप एक सुंदर उपक्रम चला रहा है—जैन संस्कार विधि। किसी भी पर्व को जैन संस्कार विधि से मनाने से उसकी गुणवत्ता शत गुणित हो जाती है। साध्वीश्री जी ने ज्यादा से ज्यादा लोगों को जैन संस्कार विधि से जुड़ने का आह्वान किया।

तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने सभी का स्वागत किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कार्यशाला की प्रशंसा की। अभातेयुप से मनीष पटावरी, तेरापंथ सभा के मंत्री सुशील सुराणा सहित पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति कार्यशाला में उपस्थित थे।

## बैंगलोर, गांधीनगर

तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि आत्मा का त्राण व प्राण है रक्षाबंधन सांस्कृतिक मूल्यों से सराबोर भाई-बहन के पवित्र रिश्तों का हिमायती, भारतीय पर्व त्योहार में जाना पहचाना नाम है—रक्षाबंधन। बहनों द्वारा भाइयों की कलाइयों को रक्षा कवच से सजाने वाला यह त्योहार पारस्परिक स्नेह, सम्मान और विश्वास की संपुष्टि करने वाला पर्व है।

युवा मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि पर्व हमें नई प्रेरणा देने वाला है, रक्षाबंधन से हमें आत्मरक्षा की प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। बालसंत मुनि जयदीप कुमार जी ने संघ प्रभावना की प्रेरणा दी।

द्वितीय सत्र में जप अनुष्ठान का कार्यक्रम रखा गया। मुनिश्री ने कहा कि अनुष्ठान से शक्ति, सामर्थ्य व आत्मा का कल्याण होता है। जप अनुष्ठान में विक्रम दुगड़ व अरविंद जैन ने मंत्रोच्चार किया।

## बालोतरा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया। मुख्य संस्कारक पुष्पराज कोठारी ने सहयोगी संस्कारक रमेश भंसाली के साथ मिलकर रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार द्वारा मनाया।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि गृहस्थ जीवन में जैन संस्कार विधि श्रावक समाज को अनावश्यक हिंसा व बाहरी आडंबर से बचा सकती है। मुनिश्री ने बताया कि रक्षाबंधन पर्व सांसारिक पर्व होते हुए भी उसमें आध्यात्मिकता के रूप में जैन संस्कार विधि से इसका आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। मेरे जीवन में भी पिछले ४६ वर्ष के संयम पर्याय में यह दूसरा अवसर है जब मेरी संसारपक्षीय बहन यहाँ उपस्थित है। मुनि जयेश कुमार जी ने उपस्थित सभी भाई-बहनों के जोड़ों को अपने बचपन को वापस जीने की प्रेरणा प्रदान की।

मुनि जयेश कुमार जी की संसारपक्षीय बहन निधि बरलोटा ने अपने भाई के प्रति गीत का संगान किया। रमेश भंसाली ने उपस्थित श्रावक समाज को रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने का आह्वान किया। तेयुप कोषाध्यक्ष सुनील लुणिया ने आभार ज्ञापन किया।

## राजाजीनगर

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा सेवा सारथी के अंतर्गत रक्षाबंधन के अवसर पर तेयुप द्वारा उद्घाटित श्रीरामपुरम स्थित कन्या आश्रम में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने होस्टल की कन्याओं को रक्षाबंधन की विशेषताएँ एवं जानकारी दी। तत्पश्चात नाश्ता करवाया, मिठाई वितरण की।

इस अवसर पर कन्या आश्रम प्रायोजक परिवार से संजीव गन्ना एवं भारती पोकरना की उपस्थिति रही। तेयुप द्वारा विशेष आमंत्रित मुकेश गन्ना एवं राजेश पोरवाल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

# अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन

**रोहिणी, दिल्ली।**

साध्वी डॉ० कुंदनरेखाजी के सान्निध्य में अणुव्रत गोष्ठी रखी गई। अणुव्रत समिति, दिल्ली के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने अणुव्रत के विषय में बोलते हुए अधिक-से-अधिक समिति के सदस्य बनने का आह्वान कया। अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित असली आजादी अपनाओ कार्यक्रम आदि के विषय में जानकारी दी।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का यह महान अवदान अणुव्रत, आज जन-जन का आंदोलन बन गया है। अणुव्रत आंदोलन कुछ ही वर्षों में अपने ७५वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। हम सबका परम कर्तव्य है कि हम अधिक से अधिक अणुव्रती बनें। अणुव्रत समिति, दिल्ली अच्छा कार्य कर रही है। इस अवसर पर अणुव्रत पत्रिका का जीवनशैली विशेषांक एवं अणुव्रत पत्रिका साध्वीश्रीजी को भेंट की गई।

अणुव्रत समिति, दिल्ली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल बैंगानी, उपाध्यक्ष अजय राज रांका, मंत्री धनपत नाहटा, संगठन मंत्री मनोज बरमेचा, परामर्शक नत्थूराम जैन सहित कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही। तत्पश्चात रोहिणी क्षेत्र के सदस्यों के मध्य 'संवाद सदस्यों के साथ' एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित ट्रस्ट डीड व उसके पश्चात होने वाले कार्यों के बारे में सदस्यों को जानकारी दी।

# स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

**फरीदाबाद।**

फरीदाबाद श्रावक समाज ने भारत के ७६वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेरापंथ भवन के प्रांगण में ध्वजारोहण का कार्यक्रम का आयोजन किया। अमृत महोत्सव में श्रावकों का उत्साह व ऊर्जा दर्शनीय था। तेरापंथ समाज के वरिष्ठ श्रावकों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात समाज ने राष्ट्रगान गाया और भारत माता की जय के उद्घोषों से पूरा प्रांगण गूंजायमान हो गया।

तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद ने मिष्ठान वितरण कर आयोजन में मिठास भर दी।

# स्वतंत्रता दिवस के आयोजन

## अहमदाबाद

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा भोजन वितरण का कार्यक्रम शाहीबाग में किया गया।

तेरापंथ किशोर मंडल, अहमदाबाद की एक पहल की राष्ट्रीय पर्व के दिन आसपास के सभी गरीबों को इसी पहल के तहत गायत्री मंदिर, सिविल हॉस्पिटल, आचार्य महाप्रज्ञ ओवर ब्रिज आदि जगह पर भोजन वितरण किया।

## जयपुर

स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम अणुव्रत समिति ने जयपुर पब्लिक स्कूल के साथ मिलकर मनाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उद्योगपति मोहन डागा तथा गेस्ट ऑफ ओनर अशोक सारणा थे। सर्वप्रथम ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। बच्चों ने स्वतंत्रता दिवस पर कविता, गीत तथा नृत्य नाटिका के माध्यम से अपनी भावनाओं की प्रस्तुति दी। मोहन डागा ने अपना वक्तव्य दिया।

माँ भारती की रक्षा में अपने प्राणों की परवाह किए बिना ही दिन-रात तत्पर रहने वाले सभी वीर जवानों को हृदय से नमन करते हुए समस्त अभिभावक, शिक्षकों व बच्चों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ दी।

## राजसमंद

तेयुप एवं भिक्षु बोधि स्थल राजसमंद के संयुक्त तत्त्वावधान में आजादी के ७५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मनाया जा रहे अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन भिक्षु बोधि स्थल प्रांगण में मुनि प्रसन्न कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सभा अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, विशिष्ट अतिथि अभातेयुप के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य भूपेंद्र मादरेचा, अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या नीना कावड़िया एवं तेयुप के अध्यक्ष भूपेश धोका सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

समारोह की शुरुआत मुनिश्री के मंगलपाठ से हुई। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने आजादी के महत्त्व पर अपना उद्बोधन दिया तत्पश्चात सभा अध्यक्ष ने झंडारोहण किया तथा उपस्थित सभी सदस्यों और पदाधिकारियों ने राष्ट्रगान का संगान किया।

## पूर्वांचल-कोलकाता

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेयुप द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, लेकटाउन में आयोजित किया गया। अध्यक्ष राजीव खटेड़, उपाध्यक्ष अमित बैद ने मिलकर झंडारोहण करवाया।

अध्यक्ष राजीव खटेड़ ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री हेमंत बैद ने किया।

कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष-द्वितीय, नवीन सिंघी, सहमंत्री प्रथम यश दुगड़, एटीडीसी सहसंयोजक नीरज बैंगाणी, स्थायी अतिथि संदीप सिंघी, सदस्य हितेंद्र बांठिया सहित अनेक कार्यसमिति सदस्य व किशोर मंडल के कार्यकर्ता उपस्थित थे। अभातेयुप संस्कारक अनूप गंग ने महामंत्र नवकार से कार्यक्रम की शुरुआत की।

# शपथ ग्रहण समारोह

**जसोल।**

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा का शपथ ग्रहण समारोह हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

निवर्तमान अध्यक्ष मोतीलाल जीरावला ने नव निर्वाचित अध्यक्ष उषभराज तातेड़ को शपथ दिलाई। नव निर्वाचित अध्यक्ष उषभराज तातेड़ ने अपने मंत्री मंडल का गठन कर सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में महासभा के जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा, सिवांची मालाणी संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य व बालोतरा सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, कुमारपाल संखलेचा आदि वक्ताओं ने विचार रखे। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की प्रमुख व अग्रणी संस्था है—तेरापंथ महासभा। पूरे भारत में करीब ६०० से ऊपर शाखाएँ है। पूरी तेरापंथ सभा एक टीम है, मिलजुलकर मुट्ठी की तरह काम करें। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

# उवसग्गहर स्तोत्र जप अनुष्ठान का आयोजन

**विशाखापट्टनम्।**

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'उवसग्गहरं स्तोत्र-जप अनुष्ठान' का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। जिसमें मुनिश्री ने गीत का संगान किया। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने सह-संगान किया। उपस्थित जनता ने तन्मयता के साथ जाप किया और मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

सभा अध्यक्ष चंपालाल डूंगरवाल ने आभार ज्ञापन किया। तेमम और तेयुप का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।

# आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

**प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा**

## अकर्म से निकला हुआ कर्म

अकर्म में कर्म और कर्म में अकर्म की स्थिति अभ्यास द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। अभ्यास जितना गहरा होगा, अनुभव उतना ही पुष्ट होगा। प्रारंभिक अभ्यास के क्षणों में बाहरी आलंबन भी काम करता है।

आज प्रातः हालैंड के राजदूत एच० लियोपोल्ड आए थे। वार्तालाप के बीच उन्होंने पूछा कि जैनों में मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक दो संप्रदाय हैं। आप उनमें से कौन हैं?

मैंने उनको बताया कि हम अमूर्तिपूजक हैं तो उन्होंने साश्चर्य कहा–'मूर्ति में आर्ट है, इतिहास है और वह एकाग्रता का साधन है। फिर भी आप उसे क्यों नहीं मानते?

मैंने उनको समझाते हुए कहा–'हम मूर्ति को नहीं मानते हैं, यह बात नहीं है। मूर्तियाँ हमारी संस्कृति की प्रतीक हैं। उनमें कला है, इतिहास है और व्यक्ति को एकाग्र बना देने का गुण है। इनसे हमारी कोई विप्रतिपत्ति नहीं है। इस दृष्टि से मूर्तियों की उपयोगिता निर्विवाद है।

हमारी यह मान्यता है कि वे पूजने की वस्तु नहीं है। उनका आलंबन लिया जा सकता है, पर उनकी पूजा करने की बात हमारी समझ में नहीं आती। हम आलंबन को आलंबन समझें और जब तक आवश्यकता अनुभव हो, ध्यान के लिए भी आलंबन लेते रहें। एक स्थिति तक पहुँचने के बाद आलंबन की अपेक्षा नहीं रहती, उस स्थिति में उससे बंधकर रहने की भी जरूरत नहीं है।

इस संदर्भ में मैं आपको एक पौराणिक कहानी सुना रहा हूँ–

एक बार मेढकदेव ध्यान लगाकर बैठा। वह ध्यान में इतना एकाग्र हो गया कि शंकरजी का आसन प्रकंपित हो गया। वे मेढक देव के सामने प्रकट होकर बोले–'मैं आपकी साधना से प्रसन्न हूँ। कहिए, आपकी क्या सेवा करूँ?' मेढकदेव बोला–'और तो मुझे कोई अपेक्षा नहीं है, पर जब मैं ध्यान लगाकर बैठता हूँ तो एक चूहा इधर आता है। उसे देखते ही मैं काँप जाता हूँ। आप कुछ कर सकें तो मुझे इस संकट से मुक्त कर दें।'

शंकर ने मेढक को जंगली चूहा बना दिया। अब उसे चूहे से कोई भय नहीं रहता, पर उसका ध्यान बिल्ली ने ले लिया। शंकर ने फिर अनुकंपा की और उसे बिल्ली बना दिया। बिल्ली से कुत्ता, कुत्ते से चीता और चीते से शेर बन जाने पर भी मेढकदेव की व्यथा समाप्त नहीं हुई। अब उसे उन शिकारी आदमियों का भय सताता है जो हाथ में बंदूक लेकर जंगल में घूमते हैं।

मेढक शंकरजी के सहारे साधना को निर्विघ्न देखना चाहता था, पर उससे समाधान नहीं मिला तो उसने आलंबन छोड़कर देखना चाहा। इस बार उसने शंकर से अनुरोध किया कि मुझे पुनः मेढक बना दो। भय के सारे मार्गों से गुजरने के बाद वह अपनी मूल स्थिति में लौटा और निर्भय होकर ध्यान में बैठ गया। भय से ऊपर उठने के बाद जैसी एकाग्रता हुई, वह विलक्षण थी।

इस कहानी से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि साधक को प्रारंभ में आलंबन की अपेखा रहती है, पर अभ्यास जितना गहरा होगा, आलंबन छूटता जाएगा। ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियों की अपेक्षा होती है, पर चढ़ जाने के बाद वे अंकिचित्कर हो जाती हैं। सीढ़ियाँ चढ़ते ही जाएँ और मंजिल तक न पहुँचें, यह केसे हो सकता है? इसी प्रकार कर्म करते ही जाएँ और कभी अकर्म न बनें तो उसका क्या अर्थ?

कोई भी साधक सहसा अकर्म नहीं बन सकता। वह अकर्म में कर्म और कर्म में अकर्म का सूत्र पकड़ ले तो समस्या का समाधान हो सकता है। पर यहाँ भी एक कठिनाई यह है कि व्यकित को ज्ञात ही नहीं हो पाता कि वह अकर्म हुआ या नहीं? ज्ञान के अभाव मे कोई भी काम सही समय पर कैसे हो सकता है।

रात के ग्यारह बज रहे थे। एक व्यक्ति ने डॉक्टर के घर की घंटी बजाई क्योंकि उस व्यक्ति को कुत्ते ने काट खाया था, इसलिए उसे डॉक्टर के सहयोग की अपेक्षा थी। डॉक्टर ने उठकर द्वार खोला। सामने मरीज को खड़ा देख वह झल्लाकर बोला, "दस बजे के बाद किसी भी मरीज को चिकित्सा-सेवा उपलब्ध नहीं होगी, बोर्ड पर लिखी हुई यह सूचना तुमने पढ़ी नहीं?'

आगंतुक मुसकुराता हुआ बोला, "डॉक्टर साहब! मैं जानता हूँ कि दस बजे के बाद आप किसी को नहीं देखते। पर कुत्ते को यह पता नहीं था। उसने मुझे दस बजे के बाद काटा इसलिए असमय में आपको तकलीफ दे रहा हूँ।'

अकर्म कब और कैसे बना जाता है? यह तत्त्व जब तक हमको ज्ञात नहीं होगा, हम कर्म और अकर्म के द्वंद्व में उलझे रहेंगे। इसलिए साधना के प्रारंभ में हम अकर्म बनने का व्यामोह छोड़कर कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखने की वृत्ति को विकसित करें। इससे जो रूपांतरण घटित होगा वह कर्म को अकर्म में बदल देगा और अकर्म में ऐसे कर्म का उद्भव करेगा जो हमारी अंतर्यात्रा में सहयोगी बन सकेगा।

## मनोबल कैसे बढ़ाएँ?

शब्द की शक्ति विचित्र है, पर उससे भी अधिक शक्ति है–संस्कारों की। शब्द सुने और विस्मृत हो गए। पर संस्कारों में जो बात आ जाती है, वह सहज रूप से नहीं छूटती। संस्कार दो प्रकार के होते हैं–नैसर्गिक और निमित्तज। नैसर्गिक संस्कारों का वातावरण पर प्रभाव कम होता है। यही कारण है कि प्रवचन सुनने या साहित्य पढ़ने पर भी जीवन क्रम में परिवर्तन नहीं आता। निमित्तज संस्कार निर्मित होते हैं। इनमें सुनी या पढ़ी हुई बात का इतना प्रभाव होता है कि मन से निकलती ही नहीं।

संसार में दोनों प्रकार के व्यक्ति होते हैं। कुछ व्यक्ति इतने संस्कारी होते हैं कि उनका मनोबल बढ़ता रहता है। उनके सामने कोई छोटी-मोटी घटना घटित हो जाए तो उन पर उसका कोई असर नहीं होता। वे लोग वहाँ अटकते नहीं, तिु उस अवरोध को लाँघकर आगे बढ़ जाते हैं।

कुछ व्यक्ति साधारण-सी घटना से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि उनका मनोबल टूट जाता है। ऐसे व्यक्तियों को सलक्ष्य प्रयोग कर ऊँचे संस्कारों का विकास करना चाहिए।

अच्छे संस्कारों का निर्माण करना और प्राप्त संस्कारों को प्रगाढ़ बनाना–ये दोनों क्रम बराबर चलते रहें तो मनोबल को बहुत बड़ा आलंबन मिल जाता है।

(क्रमशः)

# साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(८४)

आज समय के सागर में यह कैसी हलचल।
मौसम बना सुहाना घुली पवन में परिमल।।

खिली भोर सूरज से पहले नभ मुसकाया
बिछा नया आलोक मिटाकर तम का साया
धूप किशोरी वृक्षों पर चढ़कर इठलाती
खड़ी फसल जो खेतों में वह भी लहराती
निर्झरिणी भावों की अविरल बहती कलकल।।

साँसों की सरगम आस्था का गीत सुनाती
सृजन-चेतना नित्य नई सौगात सजाती
महक उठे जलजात पात सब मानस-सर में
इंद्रधनुष से रंग खिले चिंतन-अम्बर में
मिलता रहे समय पर सदा प्रेरणा का बल।।

स्वर्ग बने यह धरती ऐसी कला सिखाओ
मानव-मन की हर उलझन को तुम सुलझाओ
भावी के सुंदर सपनों को सत्य बनाओ
पतितों के पावन प्राणों को सुधा पिलाओ
बन जाए अभिराम राम! जीवन का पल-पल।।

(८५)

रेशमी किरणें बिछी हैं नील नभ में
धरा का कण-कण मधुर नगमे सुनाए
खींचती मन को महक चंदन-वनों की
आज कुदरत कौन-सा उत्सव मनाए।।

तमस हिंसा का सघन छाया जहाँ में
दीप तुमने ही अहिंसा का जलाया
जखम सीने में लगे संवेदना के
सुधा से भरकर चषक तुमने पिलाया।।

जाति मजहब की दरारें पाट तुमने
प्रेम करुणा अभय की धारा बहाई
जोड़कर टूटे हुए तटबंध सारे
जिंदगी के गणित की भाषा सिखाई।।

तेज सूरज-सा दमकता है तुम्हारा
नयन हँसते झील में मानो कमल हैं
घूमता है वलय ऊर्जा का चतुर्दिक्
जगत को आश्वस्ति देते भुजयमल हैं।।

शास्त्र अद्भुत रच दिया दर्शन अनूठा
आर्यवर! युग-युग ऋणी दुनिया तुम्हारी
जन्मदिन पर क्या तुम्हें सौगात दें हम
शेष साँसें जिंदगी की लो हमारी।।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ ज्ञान एक ऐसा तत्त्व है, जो प्रकाश करने वाला होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

MEGA BLOOD DONATION DRIVE

**श्री पेमा खांडू**
मुख्यमंत्री -अरुणाचल प्रदेश

**श्री गिरिधर गमांग**
पूर्व मुख्यमंत्री -ओडिशा

**श्री गौतम चोरड़िया**
मुख्य न्यायाधीश उच्च न्यायालय -छत्तीसगढ़

**श्री सुदेश कुमार शाही**
सहसचिव -गृह मंत्रालय

**श्री चंद्रशेखर**
(IAS) कमीश्नर -हिसार

**श्री जयप्रकाश**
पूर्व मेयर -दिल्ली

**श्री जब्बर सिंह सांखला**
विधायक -आसींद, हुरड़ा क्षेत्र

**श्री चेतन प्रकाश**
इंस्पेक्टर रेलवे सुरक्षा बल(RPF) -जम्मू

**श्री ब्रजेश पाठक**
उपमुख्यमंत्री -उत्तर प्रदेश

**श्रीमती रेणुदेवी**
पूर्व उपमुख्यमंत्री बिहार

**श्री तारा किशोर प्रसाद**
पूर्व उपमुख्यमंत्री -बिहार

**डॉ मनीषा भिमानी**
कार्यकारी अधिकारी HHPAKICI

**श्रीनिवास गौड़**
खेल और एक्साइज मंत्री -तेलंगाना

**श्री जीवेश मिश्रा**
सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री -बिहार

**श्रीमती निलज़ा आंगमो हशूर**
मीडिया प्रभारी बीजेपी, लद्दाख

**श्री नज़ीर अहमद**
प्रदेश उपाध्यक्ष बीजेपी -लद्दाख

**श्री विधान राय**
डी एम सिउरी -बीरभूम

**श्री अनूप जलोटा**
मशहूर गायक गीतकार

**श्री अनमोल जायसवाल**
भारतीय बैकपैकर -यूट्यूबर

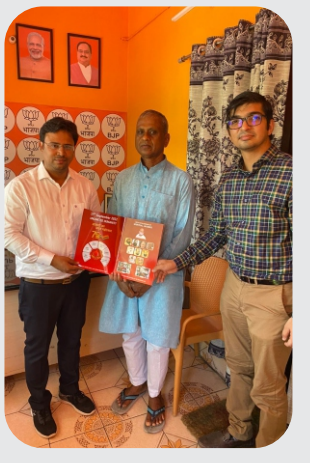

**श्री शिव नारायण महतो**
बीजेपी उपाध्याक्ष -बिहार

Globally Supported by:
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

Empowered By:
OLD UNION
THANGA HOUSE
ANTISPOT

Powered By:
Lalwani Ferro Alloys Ltd

Promoted By:
BIKAJI

# तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

**श्री सुनील बाबूराव मेंधे**
एम. पी. -गोंदिया महाराष्ट्र

**श्री महेश शर्मा**
पूर्व प्रदेशाध्यक्ष भाजपा -राजस्थान

**श्री दिलबाग सिंह**
आईएएस -डीजीपी -जम्मू & कश्मीर

**श्री ठाकुर रमेश सिंह**
भाजपा उपाध्यक्ष -मुंबई

**श्री जीवन कृष्ण साहा**
एमएलए -पश्चिम बंगाल

**श्री नवीन जैन**
President -All India Mayor Council

**श्री कैलाश विजयवर्गीय**
राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

**श्री फिरहाद हाकिम**
मेयर -कोलकाता

**श्री सोमदत्त**
विधायक सदर बाजार, दिल्ली

**श्री ओम प्रकाश शर्मा**
विधायक, विश्वास नगर -दिल्ली

**श्री शैलेश लोढ़ा**
टीवी हास्य कलाकार

**श्री शशांक साई**
आईपीएस -पुलिस अधीक्षक (तमिलनाडू)

**श्री मनीष जैन**
मंडल रेल प्रबंधक (पूरे) -हावड़ा

**श्रीमती निधी चौधरी**
जिल्हादंड प्रतिपालक -मुंबई उपनगर जिल्हा (1)

**श्रीमती राजकुमारी दीया कुमारी**
एम. पी. राजसमंद -राजस्थान

**श्रीमती शताब्दी रॉय**
लोकसभा सदस्य -बीरभूम

**श्री देवेंद्र जोशी**
जिलाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी -जोधपुर

**श्री देवीलाल साहू**
नगरपालिका चेयरमैन -आसींद

**श्री देबब्रत मजुमदार**
विधायक जादवपुर

**श्री जी. वी. एल.नरसिम्हा राव**
राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा

**17 सितम्बर 2022 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 1000 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों के माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.mbdd.in पर लॉगिन करें।**

www.facebook.com/megablooddonationdrive | www.twitter.com/iMdonatingBlood | abtyp-mbdd | www.mbdd.in

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *सम्यक्त्व की प्राप्ति बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। दुनिया में अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं, किंतु सम्यक्त्व के समान दूसरा कोई रत्न नहीं होता।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

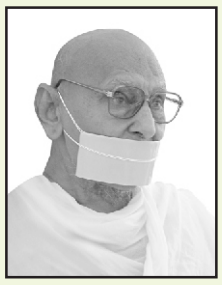

# संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

## बंध-मोक्षवाद

### मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

**भगवान् प्राह**

**(१३) पदार्थज्ञानमात्रेण, न ज्ञानं सम्यगुच्यते।**
**आत्मलीनस्वभावं यत्, तज्ज्ञानं सम्यगुच्यते।।**

*पदार्थों को जान लेने मात्र से ज्ञान को सम्यग्ज्ञान नहीं कहा जा सकता। जिस ज्ञान का स्वभाव आत्मा में लीन होता है, वह ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहलाता है।*

विभिन्न व्यक्तियों का विभाग किया जाए तो वे दो रूपों में विभक्त हो सकते हैं—बौद्धिक-ज्ञानी और आत्म-ज्ञानी। बौद्धिक ज्ञान की दृष्टि से एक साधक दुर्बल हो सकता है, और आत्मज्ञान की अपेक्षा से एक बुद्धिजीवी भी। बौद्धिक ज्ञान आत्मा की दृष्टि में हेय है। वह व्यक्ति को छोटे-छोटे घरौंदों में बाँधता है; जबकि आत्मज्ञान मुक्त करता है। बौद्धिक ज्ञान एक प्रकार का आवरण है, जो आत्मा का स्पष्ट या अस्पष्ट दर्शन भी नहीं करा सकता। अज्ञान की कारा से मुक्त जहोने पर शिष्य गा उठता है—मैं इसलिए गुरु को नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने अज्ञान-तिमिर से अंधे व्यक्तियों की आँखों में ज्ञान-रूपी अंजन आंज कर दिव्य चक्षु प्रदान किए हैं।

जो ज्ञान अज्ञान को नष्ट नहीं करता वह ज्ञान ही नहीं है। दवा रोग-नाश के लिए दी जाती है। यदि वह रोग को बढ़ाएँ तो उसका क्या प्रयोजन है? इसी प्रकार यदि ज्ञान मुक्त—स्वतंत्र नहीं करता है तो वह ज्ञान भी क्या है? 'सा विद्या या विमुच्यते'—विद्या वही है जो व्यक्ति को बंधनों से मुक्त करे। इसलिए वह ज्ञान सम्यग् ज्ञान की कोटि में आता है, जो आत्मलीन करो। इसलिए वह ज्ञान सम्यग् ज्ञान की कोटि में आता है, जो आत्मलीन होकर आत्मा को बंधन-मुक्त करता है।

**(१४) अनंतधर्मकं द्रव्यं, ज्ञेयं धर्मावुभौ स्फुटम्।**
**सामान्यञ्च विशेषश्च, द्रव्यं तदुभयात्मकम्।।**

*अनंत धर्मात्मक—अनंत विरोधी युगलात्मक द्रव्य ज्ञेय होता है। अनंत धर्मों में दो धर्म प्रमुख हैं—सामान्य और विशेष। द्रव्य केवल सामान्यात्मक अथवा केवल विशेषात्मक नहीं होता। वह उभयात्मक—सामान्य-विशेषात्मक होता है।*

**(१५) सामान्यग्राहकं ज्ञानं, संग्रहो नय इष्यते।**
**विशेषगाहकं ज्ञानं, व्यवहारनयो मतः।।**

*जो सामान्य को ग्रहण करता है, जानता है, वह संग्रह नय कहलाता है। जो विशेष को ग्रहण करता है, जानता है, वह व्यवहार नय कहलाता है।*

**(१६) उभयग्राहकं ज्ञानं, नैगमो नय इष्यते।**
**सामान्यञ्च विशेषश्च, यतो भिन्नो न सर्वथा।।**

*जो सामान्य और विशेष—दोनों को ग्रहण करता है, जानता है, वह नैगम नय है। इसका तात्पर्य है—सामान्य और विशेष सर्वथा भिन्न नहीं है।*

**(क्रमशः)**

# अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

## धर्म बोध

### शील धर्म

**प्रश्न २** : ब्रह्मचर्य के कितने प्रकार हैं?

**उत्तर** : ब्रह्मचर्य दो प्रकार का होता है—
(१) औदारिक, (२) वैक्रिय।
औदारिक के अंतर्गत मनुष्यों एवं तिर्यंचों का समावेश होता है और वैक्रिय देवता, वैक्रिय लब्धिधारी मनुष्य व तिर्यंच से संबंधित है।
औदारिक शरीरी व वैक्रिय शरीरी के साथ तीन करण (करना, कराना और अनुमोदन करना) से, तीन योग (मन, वचन और काया) से अब्रह्म का सेवन न करना। दोनों औदारिक व वैक्रिय शरीरी के साथ नौ-नौ विकल्प होने से ६ x २ = १८ होता है।

**प्रश्न ३** : क्या ब्रह्मचर्य के और भेद भी होते हैं?

**उत्तर** : ब्रह्मचर्य के विवक्षा से २७ भेद किए गए हैं—देवता, मनुष्य व तिर्यंच के साथ तीन करण व तीन योग से अब्रह्मचर्य का सेवन न करना। इस प्रकार ३ x ३ x ३ = २७ हो जाते हैं।

**(क्रमशः)**

# उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

## आचार्य हेमचंद्र

प्रबंध चिंतामणि के अनुसार जब बालक आठ वर्ष का था, तब अपने समन्वयस्क बालकों के साथ क्रीड़ा करता हुआ देव-मंदिर में पहुँच गया। संयोग से वहाँ देवचंद्रसूरि पधारे हुए थे। अपनी मस्ती में क्रीड़ा करता हुआ बालक देवचंद्रसूरि के पट्ट पर बैठ गया। बालक के शरीर पर शुभ लक्षणों को देखकर देवचंद्रसूरि ने सोचा—**'अयं यदि क्षत्रियकुले जातस्तदा सार्वभौमचक्रवर्ती, यदि वणिग् विप्रकुले जातस्तदा महामात्यः, चेद्दर्शनं प्रतिपद्यते तदा युगप्रधान इव कलिकालेऽपि कृतयुगावतारमपि।'** यह बालक क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ है तो आवश्य ही चक्रवर्ती पद ग्रहण करेगा और वणिक् पुत्र अथवा विप्र पुत्र है तो महामात्य पद को सुशोभित करेगा। धर्मसंघ में प्रविष्ट होकर यह बालक युग-प्रवर्तक होगा। कलिकाल में यह कृतयुग का अवतार होगा।

बालक को प्राप्त करने के लिए उन्होंने तत्रस्थ नागरिकों से एवं व्यापारिक बंधुओं से संपर्क स्थापित किया। उनको साथ लेकर वे चाचिग के घर गए। चाचिग संयोग से वहाँ नहीं था। वह दूसरे गाँव गया हुआ था। पाहिनी गुणवती एवं व्यवहार-कुशल महिला थी। अपने प्रांगण में समागत अभ्यागतों का उसने समुचित स्वागत किया। देवचंद्रसूरि का धार्मिक विधिपूर्वक अभिनंदन किया। समागत बंधुओं ने देवचंद्रसूरि के आगमन का उद्देश्य पाहिनी को बतलाया और धर्मसंघ के लिए पुत्र अर्पण कर देने की बात कही। पुत्र की याचना के लिए ससंघ गुरु का पदार्पण घर पर हुआ है। ऐसे योग्य पुत्र की वह माता है, उसे इसका हर्ष था पर पति के विरोध की आशंका से वह चिंतित थी। समागत बंधुजनों के सम्मुख हर्षमिश्रित आँसुओं का विमोचन करती हुई पाहिनी बोली—'गुरुवर्य! इस बालक के पिता नितांत मिथ्यादृष्टि हैं। वे घर पर भी नहीं हैं। मैं धर्मसंकट की स्थिति में हूँ। उनकी सहमति के बिना यह कार्य कैसे संभव हो सकता है?'

पाहिनी को धैर्य से समझाते हुए श्रेष्ठिजन बोले—'बहिन! तुम अपनी ओर से उसे गुरु को प्रदान कर दो। माता का भी संतान पर अपना हक होता है।'

सम्मानित गणमान्य श्रेष्ठिजनों के कथन पर पाहिनी ने अपना पुत्र देवचंद्रसूरि को अर्पित कर दिया। देवचंद्रसूरि ने बालक की इच्छा जाननी चाही और उसे पूछा—वत्स! तू मेरा शिष्य बनेगा? बालक ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाकर 'आम्' कहकर अपनी भावना प्रकट की और वह शिष्य बनने के लिए सहर्ष तैयार हो गया।

देवचंद्रसूरि योग्य बालक को पाकर प्रसन्न हुए। वे इसे लेकर कर्णावती पहुँचे। वहाँ सुरक्षा की दृष्टि से बालक को उदयन मंत्री के पास रख दिया। मंत्री उदयन जैन धर्म के प्रति आस्थाशील था। श्रेष्ठी चाचिग जब घर आया तब बालक को घर पर न पाकर अत्यंत दुःखी हुआ। नाना प्रकार के विकल्प उसके मस्तिष्क में उभरे। पुत्र मिलन पर्यन्त भोजन ग्रहण का परित्याग कर वह वहाँ से चला। कर्णावती पहुँचकर वह देवचंद्रसूरि के पास गया। गुरु के व्यवहार पर रुष्ट चाचिग अच्छी तरह से वंदन किए बिना ही अकड़कर बैठ गया। देवचंद्रसूरि मधुर उपदेश से उसे समझाने लगे। मंत्री उदयन चाचिग के आगमन की सूचना पाकर वहाँ पहुँच गए। मंत्री उदयन वाक्-निपुण था। वह श्रेष्ठी चाचिग को अत्यंत आत्मीयभाव से अपने साथ घर ले गया। उसके भोजन की समुचित व्यवस्था की। भोजन करा देने के पश्चात् मंत्री ने चांगदेव को उसकी गोद में बैठा दिया। साथ ही तीन दुकूल और तीन लाख मुद्राएँ भेंट कीं। चाचिग का हृदय देवचंद्रसूरि की मंगलकारक प्रियवाणी को सुनकर पहले ही कुछ अंशों में परिवर्तित हो गया था। उदयन मंत्री के शिष्ट और शालीन व्यवहार से वह अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसने कहा—'मंत्रीवर! यह तीन लाख की द्रव्य राशि आपकी उदारता को नहीं, कृपणता को प्रकट कर रही है। मेरे पुत्र का मूल्य इतना ही नहीं है, वह अमूल्य है पर आपकी भक्ति भी उससे कम मूल्यवान् नहीं है। आपके द्वारा प्रदत्त मुद्राओं की द्रव्य राशि मेरे लिए अस्पृश्य है। आपकी भक्ति के सामने नतमस्तक होकर मैं अपने पुत्र की भेंट आपको चढ़ाता हूँ।'

**(क्रमशः)**

✦ *प्रतिक्रमण का अनुष्ठान आध्यात्मिक स्नान है। श्रावक समाज भी प्रतिक्रमण कंठस्थ करने का प्रयास करे।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022

# जैन विद्या परीक्षा -प्रमाण पत्र वितरण समारोह

## शाहदरा, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित १ से ६ तक के प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी जैन तेरापंथ संघ के कीर्तिधर आचार्य थे। उन्होंने संघ विकास के लिए अनेकानेक आयाम दिए। उनमें एक है—जैन विद्या परीक्षा। अध्यात्म के क्षेत्र में गति-प्रगति करने के लिए जैन विद्या का अध्ययन आवश्यक है। इससे जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण भी मिलता है।

शाहदरा सभा क्षेत्र से जैन विद्या परीक्षा में ७८ परीक्षार्थियों ने अपनी कुशलता का परिचय दिया। एकता भंसाली ने भाग -५ में ऑल इंडिया लेवल पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सरला सेठिया, सुनीता तातेड़, अंकिता मालू, सुधा बोथरा ने भाग ६ में वरीयता प्राप्त की।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, उपाध्यक्ष महावीर दुगड़, महेंद्र चोरड़िया, तेमम, दिल्ली की सहमंत्री सरला बैद, तेमम क्षेत्रीय संयोजिका मंजु बांठिया व अन्य श्रोतागण उपस्थित थे।

## ठाणे

समण संस्कृति संकाय के तत्त्वावधान में एवं शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में जैन विद्या परीक्षा-२०२१ के प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की। जैन विद्या केंद्र व्यवस्थापिका भारती सिंघवी ने स्वागत अभिभाषण किया। साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि फार्म भरना महत्त्वपूर्ण नहीं फार्म भरकर परीक्षा में बैठना महत्त्वपूर्ण है।

महाराष्ट्र प्रभारी विमला डागलिया ने अपने वक्तव्य में आगम, जैन विद्या कार्यशाला और जैन विद्या के बारे में पूरी सूचनाएँ दी। सबको इस उपक्रम से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

सेंट्रल जोन संयोजिका ममता सिंघवी ने विचार रखे। तेरापंथी सभा ठाणे अध्यक्ष रमेश सोनी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। तेजकरण बोरड ने २०२१ के जैन विद्या के फार्म में १०१ तक के फार्म भरने वालों की राशि उन्होंने स्वयं भरकर उपक्रम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। तेजकरण बोरड का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में वर्ष २०२१ के सभी १६७ सफल परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार और २ विज्ञ उपाधि धारकों का सम्मान किया गया। वागले स्टेट केंद्र व्यवस्थापक सरोज सिंघवी द्वारा वागले स्टेट केंद्र के परीक्षार्थियों को भी प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कमलेश दुगड़, अमृत श्रीश्रीमाल,विमल दुगड़, जयंती भंसाली, प्रिया मूथा, रमिला बडाला, नीलम हिरण का योगदान रहा। विशेष उपस्थिति भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल और तेरापंथी सभा ठाणे के सभी कार्यकारिणी सदस्य की रही। कार्यक्रम का संचालन केंद्र व्यवस्थापिका भारती सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन सह-केंद्र व्यवस्थापक निशा ने किया।

## सिकंदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में जैन विद्या के प्रमाण पत्र वितरण का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन में ज्ञान का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित जैन विद्या पाठ्यक्रम हर व्यक्ति के लिए है। यह बहुत ही अच्छा उपक्रम है।

कार्यक्रम में २६० विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। हैदराबाद के ५ परीक्षार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

# दंपति कार्यशाला के आयोजन

## वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र तथा मंगलाचरण पंकज मंजु परमार, पंकज दिलखुश चंडालिया, महावीर रंजन हिरण, अरविंद नम्रता खटेड ने किया। स्वागत वक्तव्य तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद सुमन बाफना द्वारा किया गया।

साध्वी ललिताश्री जी ने कहा कि सैकड़ों कष्ट आने पर भी राम-सीता, सत्यवान-सावित्री एवं नल-दमयंती की तरह अडिग रहें। साध्वी शारदाप्रभाजी, साध्वी सम्यक्यशा जी ने उद्गार व्यक्त किए।

तेमम संयोजिका इंदु बडाला ने जैन विद्या कार्यशाला की जानकारी दी। तेमम मुंबई द्वारा आयोजित सुर-सुगम फिनाले प्रतियोगिता में वाशी महिला मंडल की बहनें प्रेक्षा कोठारी, शीतल मेहता, पदमा गादिया, विजेता भंसाली, रेणु कोठारी ने भाग लिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में परिषद अध्यक्ष महावीर सोनी, राजू कावड़िया, विमल कोठारी, जितेंद्र सिंघवी, राकेश राठौड़, अमित आंचलिया, जीतू बाफना का सहयोग रहा।

आभार ज्ञापन राकेश ललित चंडालिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री अर्जुन शिल्पा सोनी ने किया।

## कानपुर

दंपति कार्यशाला - 'रिश्तों को सरस बनाएँ' का आयोजन साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। सर्वप्रथम सभा के मंत्री संदीप जम्मड़, महिला मंडल की मंत्री रश्मि जम्मड़ और तेयुप के अध्यक्ष दिलीप मालू ने पारिवारिक गुणों की छतरी का अनावरण किया।

महिला मंडल मंत्री रश्मि जम्मड़ ने स्वागत भाषण में दंपति शिविर का महत्त्व बताया। साध्वी दीप्तियशा जी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी भावनाश्री जी ने कहा कि जिस तरह एक वाक्य को अर्थ से परिपूर्ण करने के लिए व्याकरण की आवश्यकता है, उसी तरह एक परिवार को पूरा होने के लिए परिवार के सभी सदस्यों में सामंजस्य होना चाहिए।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने कहा कि विश्वास, संयम और सहिष्णुता को अपनाएँ और अहंकार को तिलांजलि दें, तभी दाम्पत्य जीवन सुखी रह सकता है। धन्यवाद प्रस्ताव दिलीप मालू ने दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका भूतोड़िया ने किया। प्रभा मालू और ऋतु जैन ने रोचक गेम खिलाए।

# अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

**जयपुर।**

प्रेम निकेतन स्कूल मालवीय नगर, जयपुर में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट करवाया गया। जिसमें कक्षा ३ से ५ तथा कक्षा ६ से ८ के ५० बच्चों ने पर्यावरण पर संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया। बच्चों ने हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में गीत प्रस्तुत किए। गीत प्रतियोगिता एकल तथा सामुहिक दोनों ही रूपां में प्रस्तुत की गई।

# केबीसी प्रतियोगिता का आयोजन

**जाटाबास, जोधपुर।**

तेयुप के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता केबीसी का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से प्रारंभ प्रतियोगिता में पच्चीस बोल, ग्यारह आचार्य, तेरापंथ का इतिहास व ऐतिहासिक स्थल आदि पर आधारित प्रश्न पूछे गए।

शासनश्री साध्वी श्री जी ने कहा कि भगवान महावीर की वाणी है पहले ज्ञान करो फिर दया करो। पाँच आचार में ज्ञानाचार का प्रथम स्थान है। मोक्ष तत्त्व का प्रथम स्तंभ है सम्यक् ज्ञान। यह प्रतियोगिता अध्यात्म ज्ञान की वृद्धि के लिए उपयोगी है।

साध्वीवृंद के निर्देशन में प्रश्नोत्तर की तैयारी और प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में तप ग्रुप ने प्रथम, ज्ञान ग्रुप ने द्वितीय व वीर्य ग्रुप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कुल २५ प्रतियोगियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन आकांक्षा जैन द्वारा किया गया। तेयुप मंत्री विनोद सुराणा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

# रक्तदान शिविर के आयोजन

## विजयनगर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने तेरापंथ सभा भवन में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया। संस्कारक लाभेष कांसवा एवं धीरज भादानी के साथ मिलकर रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार द्वारा कैसे मनाया जाए, उसकी जानकारी डेमो के माध्यम से दी।

परिषद अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने जैन संस्कार विधि के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन संयोजक अमित नाहटा ने किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष महावीर टेबा, उपाध्यक्ष मनीष चावत, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रायोजक भंवरलाल मांडोत परिवार ने भी कार्यक्रम की प्रशंसा की।

## वाशी

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य संस्कारक चंद्रप्रकाश मेहता, सहयोगी संस्कारक जसराज छाजेड़ ने साथ मिलकर रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार द्वारा कैसे मनाया जाए, उसकी जानकारी डेमो के माध्यम से दी।

तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने जैन संस्कार विधि की जानकारी दी।

साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि ग्रहस्थ जीवन में जैन संस्कार विधि श्रावक समाज को अनावश्यक हिंसा व बाहरी आडंबर से बचा सकती है।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मंत्री महावीर हिरण, कोषाध्यक्ष विनोद बाफना, निवर्तमान अध्यक्ष नितेश बाफना, पंकज चंडालिया, राकेश राठौड़, पवन परमार, हरीश गादिया, राजू कावड़िया का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन पंकज चंडालिया ने किया।

## गंगाशहर

मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में श्रेष्ठ जोड़ी रक्षा बंधन की' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में भाई-बहनों के ७० से अधिक जोड़ों ने भाग लिया एवं विभिन्न टास्क, राउंड्स के जरिए अपना दमखम दिखाया। ६ राउंड हुए, वाइल्ड कार्ड एंट्री भी रखी गई। टॉप ७ जोड़ियों में से भाई-बहन की तीन जोड़ियाँ शीर्ष स्थान पर पहुँचीं।

प्रथम स्थान पर भरत गोलछा-कनक सेठिया की जोड़ी श्रेष्ठ जोड़ी रही। ऋषभ-प्रिया संचेती ने द्वितीय एवं दिव्यांश-ज्योत्सना तातेड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम में ललित राखेचा एवं पूजा रितू बोथरा ने सूत्रधार की भूमिका निभाई। तेरापंथ सभा मंत्री रतन छलानी ने आभार ज्ञापन किया। प्रतियोगिता को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा के नेतृत्व में किशोर मंडल संयोजक दीपेश बैद, सह-संयोजक संदीप रांका आदि सभी तेयुप सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं पर अनुशासन करे तो व्यवस्था सम्यक् हो सकती है।*

**–आचार्यश्री महाश्रमण**

# ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम

## सिरसा

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला में वार्षिकोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र की प्रस्तुति के साथ हुआ। इसके साथ हिंसा पर अहिंसा की विजय सुंदर नाटिका व सामूहिक संगान अर्हं-अर्हं की वंदना से श्रोता भाव विभोर हो गए।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चे परिवार की रौनक, समाज का गौरव व देश की धरोहर हैं। अभिभावक अपने संस्कारों से बच्चों के भविष्य को संवारें। ज्ञानशाला संस्कारशाला है। ज्ञानशाला से नैतिक, धार्मिक संस्कार पाकर कार्यकर्ता साधु-साध्वी बने हैं।

तेरापंथी सभा, सिरसा की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में सभी बच्चों को पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का संचालन कमल सुराणा व राजेश पुगलिया द्वारा किया गया।

## कालांवाली

शासनश्री साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। बच्चों ने कई रोचक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। सुंदर प्रस्तुतियों की तैयारी साध्वी गंभीरप्रभाजी ने करवाई। सभा मंत्री मोहनलाल बंसल ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया। हरियाणा समण संस्कृति संकाय के हरियाणा प्रभारी दिनेश गर्ग ने सभी बच्चों को भविष्य के प्रति शुभकामनाएँ दी। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में दीक्षांत समारोह में मिले श्रेष्ठ प्रभारी सम्मान से सभा अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया।

हरियाणा ज्ञानशाला प्रभारी रवि गोयल ने ज्ञानशाला की उपयोगिता पर अपने विचार रखे। साध्वी निर्मलयशा जी ने कहा कि आज के ये बच्चे ज्ञानशाला से सद्संस्कार लेकर कल डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर जो बनें ये संस्कार सदा कायम रहेंगे। इस अवसर पर एक रैली निकाली गई कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला टीचर पुष्पा सिंगला ने किया।

## वृहद कोलकाता

ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर वृहद कोलकाता, दक्षिण बंगाल के ज्ञानशाला अंचल द्वारा साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्रीजी का प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ। ज्ञानार्थियों द्वारा रैली निकाली गई। अनेक ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय पारख, समाज भूषण कल्याण मित्र गोयल परिवार के सुरेश गोयल, कोलकाता सभा कि निवर्तमान अध्यक्ष बुधमल लुणिया आदि सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में पूरा कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हुआ।

## उदयपुर

मुनि सुरेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा ज्ञानशाला दिवस तेरापंथ भवन बिजोलिया हाउस में मनाया गया। जिसमें ७२ बच्चों ने भाग लिया।

ज्ञानशाला गीत के आगाज से शुरू हुए कार्यक्रम में मुनि सुरेश कुमार जी ने कहा कि बच्चे कच्ची सुराही की तरह होते हैं। उन्हें जिस आकृति में ढालें वह उसी आकार में ढल जाते हैं। ज्ञानशाला आज की भागती-दौड़ती जिंदगी के बीच सबसे अहम जरूरत है।

मुनि संबोध कुमार जी 'मेघांश' ने कहा कि मुस्कुराते बच्चे किसी स्वर्ग का एहसास देते हैं। अब दादा-दादी, नाना-नानियों का दौर गुम हो गया, जब कहानियाँ संस्कार परोसती थीं, अब ज्ञानशाला ही विकल्प है।

मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त आई०ए०एस अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने कहा कि तेरापंथ ने समूचे विश्व में जैन धर्म को परिभाषित किया है। कार्यक्रम में नन्हे-नन्हे ज्ञानार्थियों ने रोमांचक परिसंवाद तथा एक्शन सॉन्ग की भी प्रस्तुति दी।

स्वागत ज्ञानशाला संरक्षक फतहलाल जैन ने किया। तेयुप उपाध्यक्ष नाहटा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी ने किया।

कार्यक्रम में सभा सहमंत्री महेश पोरवाल, तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा पोरवाल, ज्ञानशाला सह-संयोजिकाएँ सुनिता नंदावत, प्रतिभा इंटोदिया, बसंत कंठालिया एवं अन्य १४ प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित रही। कार्यक्रम का संयोजन संगीता पोरवाल ने किया।

## पीलीबंगा

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव और ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ को युग के अनुरूप आचार्यों का नेतृत्व मिला है। साध्वीश्री जी ने कहानी के माध्यम से बताया कि सही समय पर दिया गया प्रशिक्षण व्यक्ति को बदल देता है। ज्ञानशाला में प्रशिक्षिकाएँ बच्चों को प्रशिक्षण देती हैं। बच्चे कच्चे घड़े के समान हैं। उन्हें आप जैसे ढालेंगे वैसे ही ढल जाएँगे। ज्ञानशाला में प्रशिक्षिकाओं को जोड़ने की दृष्टि से वर्तमान प्रशिक्षिकाओं ने संवाद प्रस्तुत किया।

साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने कहा कि आप अपने बच्चों को कार दे या ना दें पर संस्कार अवश्य दें। इसके लिए ज्ञानशाला अवश्य भेजें। साध्वी कौशल्यप्रभाजी ने गीत का संगान किया। साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा के मंत्री प्रकाश डाकलिया, तेयुप अध्यक्ष सतीश पुगलिया, तेमम अध्यक्षा विनोद छाजेड़, प्रेम नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। बच्चों के वर्षभर की प्रतिभाओं का सम्मान किया। प्रातःकालीन सत्र में प्रीति डाकलिया ने मंगलाचरण और निशा छाजेड़ ने संयोजन किया। रात्रिकालीन सत्र में प्रतिभा दुगड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## गंगाशहर

तेरापंथी महासभा के निर्देशन में स्थान-स्थान पर तेरापंथ सभाओं द्वारा ज्ञानशाला का संचालन कर बच्चों को जैन संस्कारों से पुष्पित करने का कार्य किया जा रहा है। बचपन में दिए गए शुभ संस्कारों से ही व्यक्ति सम्यक् दिशा की ओर जा सकता है। यह विचार मुनि जितेंद्र कुमार जी ने ज्ञानशाला दिवस पर व्यक्त किए।

मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला गीत द्वारा ज्ञानार्थियों ने मंगलाचरण किया। इस अवसर पर उपासक राजेंद्र बांठिया, ज्ञानशाला के संयोजक जतन संचेती, प्रशिक्षिका सुनीता पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला प्रभारी मोहित संचेती ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के नन्हे बालक-बालिकाओं ने प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा द्वारा निर्देशित नाटिका एवं गीत द्वारा ज्ञानशाला की महत्ता को बताया।

## जसोल

तेरापंथ महासभा के निर्देशन में तेरापंथ सभा जसोल के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। मारवाड़ अंचल सह-संयोजक पवन छाजेड़, जसोल प्रभारी संपतराज चोपड़ा के नेतत्व में रैली का आयोजन किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। ज्ञानशाला के लगभग ८० से अधिक ज्ञानार्थियों ने अर्हम की वंदना, नृत्य, कविता, लघु नाटिका, नमस्कार की मुद्रा, देशभक्ति गीत पर डांस जैसे अनेक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका अभयमति डोसी चोपड़ा ने किया और आभार ज्ञापन ज्ञानशाला प्रभारी संपतराज चोपड़ा ने किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, अभिभावक, ज्ञानशाला प्रशिक्षक, तेरापंथ सभा के पदाधिकारी, तेमम अध्यक्ष-मंत्री, तेयुप के अध्यक्ष-मंत्री सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

## रायपुर

ज्ञानशाला दिवस स्थानीय अमोलक भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मनाया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानार्थियों ने रैली के रूप में नारों की ध्वनि के साथ प्रवेश किया। समणीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

ज्ञानशाला संयोजिका ऋतु पोकरना ने स्वागत भाषण दिया। सभा अध्यक्ष गोलछा ने सभी का स्वागत किया व ज्ञानशाला के संचालन हेतु प्रशिक्षिकाओं को साधुवाद दिया।

समणी कमलप्रज्ञा जी ने उद्बोधन के माध्यम से ज्ञानशाला के महत्त्व को बताया व ज्ञानार्थियों को आत्मविश्वास, प्रबल इच्छाशक्ति, अच्छी संगति, क्रियाशीलता व मनस्विता जैसे सद्गुणों से विकसित जीवन जीने की प्रेरणा दी। समणी सुमनप्रज्ञा जी ने पहेली के माध्यम से सभी को प्रेरणा प्रदान की। समणी करुणाप्रज्ञा जी ने गेम्स में प्रश्न के उत्तर पूछते हुए उद्बोधन दिया।

'युवक रत्न' जज गौतम चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में अपने ज्ञानार्थी जीवन को याद किया। वर्ष २०२१-२२ के सभी ज्ञानार्थियों, पूर्व संयोजिकाओं, मुख्य प्रशिक्षिकाओं को भी सर्टिफिकेट व मोमेंटो से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में समाज की सभी संस्थाओं की उपस्थिति रही।

## हैदराबाद

हैदराबाद में संचालित सभी २० ज्ञानशालाओं का ज्ञानशाला दिवस महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ तथा तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन डीवी कॉलोनी में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम शुभारंभ जागरूकता रैली के साथ किया गया।

कार्यक्रम का दूसरा चरण साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आकर्षक मंचीय प्रस्तुतियों व प्रेरणा पाथेय के साथ संपन्न हुआ। साध्वी संपतिप्रभा जी ने अपना वक्तव्य दिया। साध्वी रश्मिप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कर्नल के० विनोद ने बच्चों को नव संदेश दिया।

आगंतुकों का स्वागत क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा ने किया। संचालक संस्था सभा की तरफ से शुभकामनाएँ सहमंत्री धमेन्द्र चोरड़िया ने किया। महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति व टीपीएफ की तरफ से शुभकामनाएँ मंडल अध्यक्षा अनिता गीडिया ने प्रेषित की। ज्ञानशाला सलाहकार अंजु बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानार्थी धृति दुगड़ व जानव दुगड़ ने किया।

## रतलाम

समणी निर्देशिका समणी भावितप्रज्ञा जी, समणी संघप्रभाजी एवं समणी मुकुलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम ज्ञानशाला के बच्चे, रैली के रूप में सभा भवन पर पहुँचे। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से समणी मुकुलप्रज्ञा जी ने की। बच्चों ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला विषयक एक नाटिका की प्रस्तुति बच्चों द्वारा दी गई।

समणी निर्देशिका जी ने ज्ञानशाला -संस्कारों के जागरण की शाला विषय पर अपना उद्बोधन दिया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सोनिया कोटडिया ने बच्चों को ज्ञानशाला में आने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला सहप्रभारी चंद्रकांता दक ने किया। इस अवसर पर समाजजनों की उपस्थिति रही।

## बैंगलोर

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मंगलाचरण राजाजीनगर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने किया। सभा के ज्ञानशाला प्रभारी रमेश कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि युग का भविष्य भावी पीढ़ी पर आधारित होता है, जिस युग की नई पीढ़ी जितनी संस्कारी होगी, उतना ही विकास की ओर अग्रसर होगा।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि गणाधिपति तुलसी के सपनों को साकार करना है, उन्होंने बच्चों को कहानी के माध्यम से प्रेरणा दी। मुनि जयदीप कुमार जी ने कहा कि बचपन में जो ज्ञान बच्चों को मिलता है, वह उनकी जीवन भर की पूँजी बन जाती है। भानुप्रिया और पुष्पा सेठिया ने नाटिका की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, महिला मंडल मंत्री सरस्वती बाफना, ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, मंत्री गौतम डोशी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। संचालन क्षेत्री संयोजिका नेहा गादिया ने किया। आभार ज्ञापन चेतना वेदमूथा ने किया। अनीता नाहर, सपना रायसोनी, चित्रा सुराणा, सुनीता भटेवरा, लता गांधी, विभा हीरावत ने दोहे के माध्यम से प्रस्तुति दी।

✦ *दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# आजादी का अमृत महोत्सव के कार्यक्रम

## अजमेर

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति, अजमेर द्वारा साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। साध्वी मौलिकयशा जी ने कहा कि हमें बाहरी परतंत्रता से आजादी चाहिए, हमें उन बुराइयों से आजादी चाहिए जो पतन की ओर ले जाती हैं। साध्वीवृंद द्वारा अणुव्रत पर आधारित गीतिका का संगान किया गया। साध्वी गुप्तिप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी सुदर्शन व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन में नैतिक गुणों के विकास से सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाया जा सकता है।

सभा के मंत्री विपिन पितलिया ने अपने विचार रखे। पार्षद अनिता चोरसिया, तेमम मंत्री कविता श्रीश्रीमाल एवं मुख्य अतिथि असिस्टेंट कमांडेंट विजय सिंह ने अपने-अपने विचार गीतिका एवं वक्तव्य के माध्यम से रखे।

अणुव्रत मंत्री संजय छाजेड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत अध्यक्षा मोनिका लोढ़ा ने किया।

## दिल्ली

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा सरोज मांटेसरी स्कूल, विवेक विहार में आयोजित किया गया। जिसमें काफी संख्या में शिक्षकों व बच्चों ने भाग लिया। अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने ध्वज की सलामी ली।

इस अवसर पर शांतिलाल पटावरी ने अणुव्रत की महत्ता बताते हुए विद्यार्थियों को नशामुक्त होने व साथ ही साथ 'नशा मुक्त परिवार सुखी व समृद्धि' की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए अपने परिवार को नशामुक्त करने की प्रेरणा दी। मंत्री धनपत नाहटा ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री द्वारा रचित गीत एंव कार्यसमिति सदस्य राजीव महनोत ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्कूल के निर्देशक एवं कार्यसमिति सदस्य रवि शर्मा के विद्यार्थियों को अणुव्रत विद्यार्थी संकल्प करवाए। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने देश भक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

## सूरत

आजादी का अमृत महोत्सव मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि समग्र भारत देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। प्रत्येक भारतवासी के दिल में गौरव की अनुभूति हो रही है।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि वृद्धावस्था में दिनचर्या का सम्यक् होना जरूरी है। वृद्धावस्था में दिनचर्या ऐसी होनी चाहिए जिससे सुस्वास्थ्य बना रहे। आहार विवेक पर भी ध्यान देना जरूरी है।

मुख्य अतिथि भद्रेश भाई शाह ने कहा कि जीवन में सुख और दुःख तो आते रहते हैं। मुश्किलें आती रहती हैं। लेकिन उनसे डरना या घबराना नहीं चाहिए।

अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने कहा कि बुजुर्गों को धन-दौलत की जरूरत नहीं होती। उन्हें जरूरत होती है परिवारजनों के प्यार और सहानुभूति की। उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता के नियमों की संक्षिप्त जानकारी दी। अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष सरोज सेठिया ने स्वागत किया। गोतम गादिया ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत प्रचेता अलका सांखला ने किया। समाज की विभिन्न संस्थाएँ तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, टीपीएफ आदि के पदाधिकारी-प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## बोइसर

अणुव्रत समिति, बोइसर द्वारा शिवाजी नगर की बोइसर पब्लिक स्कूल में अणुविभा सोसायटी के निर्देशन के अनुसार राष्ट्रीय अभियान असली आजादी अपनाओ कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष गणेशलाल नान्द्रेचा ने स्कूल में विद्यार्थी एवं शिक्षिका के समक्ष अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया एवं अणुव्रत क्या है, इसके बारे में बताया।

बोइसर पब्लिक स्कूल के ४१ विद्यार्थी एवं ५ शिक्षिकाओं ने अणुव्रत संकल्प ग्रहण कर अणुव्रत संकल्प पत्र भरकर दिए, स्कूल की शिक्षिका सरस्वती, प्रियंका, हेमलता, प्रनध्या, पूजा एवं तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष चंद्र प्रकाश सोलंकी आदि सभी का सहयोग रहा। अणुव्रत समिति अध्यक्ष ने शिक्षिका को अणुव्रत पत्रिका एवं अणुव्रत आंदोलन पत्रिका भेंट की।

## टी-दासरहल्ली

तेरापंथ भवन में ७५वाँ स्वतंत्रता दिवस को अमृत महोत्सव के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम सभा ट्रस्ट अध्यक्ष नवरतन गांधी ने ध्वजारोहण किया। उपस्थित जनसमूह ने तिरंगे को सलामी देते हुए राष्ट्रगान का संगान किया।

इस अवसर पर शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि आज स्वाभिमान के साथ हर भारतीय को गौरव की अनुभूति हो रही है कि भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि ऋषि-महर्षियों की पवित्र भूमि है भारत। सबने मैत्री, समता एवं सज्जनता का कल्याणकारी संदेश दिया है।

साध्वीवृंद के साथ तेमम, तेयुप ने गीत का सामूहिक सुमधुर संगान किया। हरियुर से समागत सुमनबाई तातेड़ ने ८ की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान कर अनुमोदना की। इस अवसर पर राकेश दक, कन्हैयालाल गांधी ने अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर सभा ट्रस्ट, तेयुप, महिला मंडल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सभा ट्रस्ट मंत्री प्रवीण बोहरा तथा आभार विजय पितलिया ने किया।

## सिरसा

स्थानीय तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में अणुविभा द्वारा निर्देशित कार्यक्रम असली आजादी अपनाओ के अंतर्गत अणुव्रत समिति सिरसा द्वारा एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें शहर के सुप्रसिद्ध कविगण व कवियत्री—राजकुमार निजात, डॉ० सील कौशिक, मेजर शक्ति राज साहब, डॉ० आरती बंसल, सुरेश वर्णवाल आदि कवियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी, साध्वी सुरेखाजी द्वारा कविता प्रस्तुत की गई। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति मंत्री अमित सिंघी द्वारा मंगलाचरण में संयम गीत का गायन हुआ। कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन नीतू गुजरानी, अभातेमम सदस्य द्वारा किया गया।

## मैसूर

७५वाँ आजादी का अमृत महोत्सव तेरापंथ भवन में मनाया गया। मुख्य अतिथि डॉ० मुकेश दलाल के द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव का ध्वजारोहण हुआ। जिसमें तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष सुरेश चंद्र पितलिया, तेयपु, महिला मंडल एवं टीपीएफ के अध्यक्ष, किशोर मंडल, कन्या मंडल सहयोगी रहे।

विशिष्ट अतिथि डॉ० दलाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रायोजक भेरूलाल विनीत कुमार पितलिया ने विशेष अतिथि का सम्मान किया। मैसूर सभा के उपाध्यक्ष सुरेश पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक ने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप सदस्य मुकेश गुगलिया, ललित मेहर आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संयोजन सेजल कोठारी तथा संचालन तेयुप मंत्री प्रमोद मुणोत ने किया। आभार ज्ञापन ऋषभ चावत ने किया। कार्यक्रम में करीब २०० सदस्यों ने भाग लिया।

## हावड़ा

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत समिति हावड़ा एवं अणुव्रत समिति कोलकाता द्वारा आयोजित अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कहा कि असली आजादी तक संभव है जब व्यक्ति का अपने मन, वाणी और शरीर पर अनुशासन होता है।

उपासक सुरेंद्र सेठिया ने मुख्य वक्तव्य दिया। अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा आचार संहिता संक्षिप्त व व्याख्यान किया। अणुव्रत की आचार संहिता का परिषद में संकल्प करवाया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में अणुविभा के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, अणुव्रत समिति हावड़ा उपाध्यक्ष सुषमा सिंघी, मंत्री राजेश बोहरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। संचालन संजय पारख ने किया।

## अमराईवाड़ी

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता दिवस पर तेयुप एवं महावीर जैन युवा संघ द्वारा संयुक्त रूप में रैली का आयोजन किया गया। जिसमें २०० से अधिक सदस्यों की उपस्थिति थी। रैली के पश्चात ध्वजारोहण कार्यक्रम सिंघवी भवन के प्रांगण में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने नवकार महामंत्र से की। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों ने अलग-अलग स्वतंत्रता सेनानी पर अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। जिसका संचालन ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी प्रियांश मांडोत ने किया।

स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया और महावीर युवा संघ के चेयरमैन निवोद चपलोत, महिला मंडल अध्यक्ष संगीत सिंघवी ने किया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने पाथेय प्रदान किया कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री हितेश चपलोत ने किया। आभार ज्ञापन अल्पेश हिरण ने किया। कार्यक्रम में दोनों संघ के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

## अहमदाबाद

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव पर ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मुख्य अतिथि के रूप में ज्ञानचंद जैन को संयोजक पुनीत चोपड़ा द्वारा मंच पर पदासीन किया गया। तेरापंथ सेवा समाज के ट्रस्टी अध्यक्ष सज्जनलाल सिंघवी, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था के महामंत्री अरुण बैद, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया, तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। मुख्य अतिथि ज्ञानचंद जैन ने ध्वजारोहण किया एवं सभी ने तिरंगे को सलामी देते हुए राष्ट्रगान का संगान किया।

मुनि कुलदीप कुमार जी एवं मुनि मुकुलकुमार जी ने स्वतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर सभी को प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन सहप्रभारी अक्षय संकलेचा एवं आभार ज्ञापन सह-संयोजक मनन बागरेचा ने किया।

## बालोतरा

स्थानीय तेरापंथ भवन में अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि शांति, सद्भावना, विश्व बंधुत्व और मैत्री ही असली आजादी का स्वरूप है। हम सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर आगे बढ़ें।

मुनि जयेश कुमारजी ने कहा कि देश के प्रति हमारा सम्मान सदा बना रहे। हम अपने भीतर देशभक्ति का भाव सदैव जीवित रखें।

कार्यक्रम में अणुव्रत सेवी ओम बांठिया ने अपनी भावना व्यक्त की। बालोतरा नगर सभापति सुमित्रा जैन ने आजादी के अमृत महोत्सव की सभा को शुभकामनाएँ दी।

इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, अणुव्रत समिति, महावीर इंटरनेशनल, भारत जैन महामंडल, जैन सोशियल ग्रुप, जेसीआई रॉयल, इनव्हील क्लब, जेसीआई बलसम और संस्कार भारती आदि सभी संस्थाओं के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। पधारे हुए अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री मुकेश सालेचा ने किया।

## राजाजीनगर

तेयुप द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तिरंगा यात्रा समायोजित की गई। तिरंगा यात्रा स्थानीय तेरापंथ भवन से शुरू होकर प्रमुख मार्गों से होती हुई राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम होते हुए पुन तेरापंथ भवन आई।

इस अवसर पर तेयुप परामर्शक प्रवीण नाहर, अध्यक्ष अरविंद गन्ना, संजीव गन्ना, प्रबंध मंडल, परिषद परिवार, किशोर मंडल की उपस्थिति रही। यात्रा को सफल बनाने में संयोजक जितेश दक का श्रम नियोजित हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# हर श्वास को धर्म-ध्यान के साथ जोड़ने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, १६ अगस्त, २०२२**

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि आज से ढाई हजार वर्ष से भी अधिक समय से पहले भगवान महावीर विराजमान थे। भगवान महावीर का विचरण होता था। राजगृह नाम का नगर वहाँ भगवान महावीर पधारे। परिषद भी आई, भगवान ने प्रवचन भी किया। परिषद वापस नगर में चली गई।

उस काल और उस समय में भगवान महावीर के ज्येष्ठ अंतेवासी शिष्य इंद्रमूर्ति गौतम भगवान की पर्युपासना करते, वे प्रश्न करते हैं कि भगवान ये छोटे प्राणी द्विन्द्रिय आदि छोटे-बड़े हैं, ये उच्छ्वास-निश्वास करते हैं, आन-अपान करते हैं, इसको तो हम जानते, देखते हैं। किंतु भगवान! जो स्थावर काय के जीव हैं, एकेन्द्रिय हैं, ये जीव हैं, ये श्वास लेते हैं, हमें कोई पता नहीं चल पा रहा है। ये भी श्वास लेते हैं क्या?

भगवान उत्तर देते हैं कि हाँ गौतम ये स्थावर के जीव भी आन-अपान, उच्छवास-निश्वास किया करते हैं। भले तुम्हें दिखाई न दे। आगम वाङ्मय में इंद्रियों के आधार पर जीवों का वर्गीकरण किया गया है—त्रस और स्थावर। जीव का एक मुख्य लक्षण है—श्वास। श्वास आ रहा है, तो जीव जिंदा है। साधु संस्था में कोई काल धर्म को प्राप्त हो जाए तो ३६ मिनट पश्चात् नाक में रुई डालकर परीक्षण करने की परंपरा है कि श्वास आ रहा है या नहीं।

अगर हम जैन शासन की दृष्टि से देखें तो ये तो स्थावर काय के जीव सजीव है। वैज्ञानिक जगत में सिर्फ वनस्पतिकाय की सजीवता की बात सिद्ध कर स्वीकार कर ली है। बाकी में वो मौन है।

प्रश्न किया गया कि ये जीव श्वास के रूप में वायु को लेते हैं, तो वायुकाय के जीव किसका श्वास लेते हैं? उत्तर दिया गया कि वायुकाय वायुकाय का ही श्वास लेती है। वायुकाय दो प्रकार का होता है—सजीव वायुकाय और निर्जीव वायुकाय। सजीव वायुकाय निर्जीव वायु का श्वास ले लेती है। पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल श्वास लेते हैं, यह विज्ञान से परे की चीज हैं, पर जैन शासन में इसका वर्णन है कि वे प्राणी भी श्वास लेते हैं।

श्वास हमारे जीवन का एक लक्षण बना हुआ है। श्वास लेना जीवन के लिए प्रथम कोटि की अनिवार्यता है। पानी, भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्सा भी अनिवार्य है। श्वास सामान्य रूप में अपने आप आता है। इतनी जरूरी चीज सहजतया मिल रही है।

हम ध्यान दें कि कैसे श्वास अच्छी तरह लिया जा सके, श्वास के साथ धर्म और अध्यात्म को जोड़ा जा सके। प्रेक्षाध्यान में श्वास से जुड़े अनेक प्रयोग हैं। दीर्घ श्वास, समवर्ती श्वास लेना, बीच में कुम्भक करना, पुरक-रेचक करना। ये ध्यान-प्राणायाम का अंग है। लंबा श्वास लेना और छोड़ना, श्वास लेते समय पेट फूलना चाहिए और छोड़ते समय पेट सिकुड़ना चाहिए। श्वास को धीरे-धीरे लें। जप को भी श्वास के साथ जोड़ सकते हैं। इससे मन की एकाग्रता अर्जित हो सकती है।

श्वास निकट का तत्त्व है। श्वास के साथ जप करते रहो। णमो सिद्धाणं का जप कायोत्सर्ग मुद्रा में करते रहें। स्थावर जीव श्वास लेते हैं, यह आदमी नहीं जानता है, पर जैन वाङ्मय में यह मान्य है। हम श्वास को ध्यान, धर्म एवं कल्याण के साथ जोड़ सकें, यह विशेष बात है। मन को श्वास के साथ एकाग्र कर लें। निर्जरा साधना का प्रयोग करते रहें।

कालू यशोविलास की व्याख्या करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि चूरू का एक मास का प्रवास कर मर्यादा महोत्सव-राजलदेसर करवा रहे हैं। वहाँ से बीदासर पधारकर भांजी महाराज को सेवा दर्शन का मौका दिराते हैं। कालूगणी की सरदारशहर पर विशेष कृपा रही है। राजलदेसर में पूज्यश्री के पैर में व्रण हो जाता है। वि०सं० १९७५ का चतुर्मास वहीं करवाते हैं। व्रण भी काफी फैल जाता है। मगन मुनि उस व्रण के चीरा देकर साफ करते हैं। धीरे-धीरे विहार कर बीदासर पधार रहे हैं। रतनगढ़ में एक पंडित हरिनंदन जी कालूगणी के पास आते हैं। व्याकरण की बात चलती है। सरदारशहर में हरियाणा के लोग अर्ज करने पधारते हैं। चूरू टमकोर, तारानगर, राजगढ़ से हिसार पधारते हैं। टोहाना, उचाना मंडी पधारते हैं।

व्यवस्था समिति प्रचार-प्रसार मंत्री नरेंद्र नाहटा ने छापर चतुर्मास गीत के बारे में बताया। गीत की प्रस्तुति हुई। अनेक क्षेत्रों के संघ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए हुए हैं। सूरत निवासियों की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि ज्ञान और दर्शन आत्मा का स्वरूप है। मुनि विकास कुमार जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

# मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

## ठाणे

चारभुजा-मुलुंड निवासी चंद्रादेवी पटवारी धर्मपत्नी स्व० संपतराज पटवारी के मासखमण तपस्या अनुमोदना का कार्यक्रम शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। साध्वी जिनरेखाजी ने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि समर्पण भाव से श्राविका चंद्रा ने संघ और परिवार का मान शिखर चढ़ाया है।

साध्वी मार्दवयशा जी ने तपस्वी बहन की अनुमोदना में अपने भाव उद्घाटित करते हुए कहा कि बहन ने ३ के ऊपर ० लगा मासखमण तप शिखर चढ़ाया है। साध्वीश्री जी द्वारा स्वरचित गीतिका प्रस्तुत की। रमिला वडाला एवं बहनों ने तथा अनिता धारीवाल ने भाव व्यक्त किए।

पारिवारिक सदस्यों पुत्रवधु वनिता, पुत्र रवि वनमाला नाहार, मंजु संचेती ने तप अनुमोदना में अपने स्वर प्रेषित किए। संतोष चोरड़िया ने अनुमोदना के भाव प्रेषित किए। सभा की तरफ से तप का अभिनंदन किया गया। सुंदर प्रस्तुति कन्या मंडल, ठाणे ने दी। किशोर गायक पार्थ दुगड़ ने गीतिका का संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष रमेश सोनी ने अनुमोदना के साथ साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा प्रदत्त मंगल संदेश का वाचन किया।

सभा द्वारा प्रेषित अनुमोदना पत्र का वाचन विनोद वडाला ने किया। मुलुंड सभाध्यक्ष चुन्नीलाल सिंघवी ने भाव व्यक्त किए। तेरापंथी सभा, भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट एवं सभी संघीय संस्थाएँ एवं समस्त तेरापंथ समाज द्वारा मोमेंटों एवं प्रमाण पत्र से तपस्वी का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री नरेश बाफना एवं कार्यक्रम का संचालन कमलेश नोलखा ने किया।

## विशाखापट्टनम्

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में सरोज देवी बुच्चा ने मासखमण तप २७ दिन का प्रत्याख्यान किया और तेरापंथी सभा की ओर से अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में श्रेया बैद ने अठाई का त्याग मुनिश्री से ग्रहण किया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि करोड़ों भावों के संचित कर्म तपस्या के द्वारा निर्जीण हो जाते हैं। शूरवीर मानव ही तप के पथ पर आगे बढ़ पाते हैं। मनिश्री ने आगे कहा कि मासखमण तप सरोज देवी बुच्चा ने किया है। मेरे जीवन का भी यह इतिहास बन गया। मेरे द्वारा यह प्रथम मासखमण तप का प्रत्याख्यान हुआ है। मासखमण के उपलक्ष्य में मुनिश्री ने गीत का संगान किया।

## माधावरम्, चेन्नई

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट बोर्ड की आयोजना में जप समवसरण, जैन तेरापंथ नगर, में तपोभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि हमें आध्यात्मिक और सहज आनंद की अनुभूति जगाने की कला सीखनी चाहिए। इसके बिना धार्मिक साधना और तपस्या भार बन जाती है। आनंद ही जीवन है, यह आध्यात्मिक जीवन दर्शन का प्रमुख सूत्र है। मुनिश्री ने तपस्विनी बहनों के तप के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हुए कहा कि तप के साथ जप-ध्यान की साधना चलती रहे। कषायों का अल्पीकरण हो।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि जीवन में अभिमान की अपेक्षा स्वाभिमान का विकास हो। अहम साधना में बाधक बनता है। आशा रांका, बबीता रांका, दिशा रांका के एकासण मासखमण पर तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा और ट्रस्टियों ने स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया।

# स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन

**हैदराबाद।**

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में 'स्वास्थ्य सुरक्षा' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सदस्य वर्षा जैन, सुराणा एवं कार्यकारिणी सदस्य द्वारा मंगलचरण से हुआ। टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया। टीपीएफ के पाँच आयाम के बारे में जानकारी दी।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि हमारा शरीर पाँच तत्त्वों से बना है और जब-जब इनमें असंतुलन होता है तब-तब कोई न कोई बीमारी इसमें हावी हो जाती है। इसलिए इन पाँच तत्त्वों में संतुलन होना बहुत जरूरी है।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि टीपीएफ ने बहुत ही समसामयिक विषय का चयन किया है। हमारे भाव मन स्वस्थ होंगे तभी हम तन से स्वस्थ हो सकेंगे।

डॉ० श्वेता मेहता, डॉ० श्रृष्टि जैन ने अपने-अपने भाव व्यक्त किए एवं विषय की जानकारी दी।

आभार ज्ञापन टीपीएफ, हैदराबाद सहमंत्री पुनीत दुगड़ ने किया। टीपीएफ से कार्यक्रम संयोजक अर्हम बैंगाणी एवं निखिल कोटेचा ने मंच संचालन किया। टीपीएफ राष्ट्रीय टीम द्वारा हैदराबाद शाखा को अच्छे कार्य के लिए साउथ जोन की 'मोस्ट एक्टिव ब्रांच' अवार्ड भी दिया गया।

# प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

**ईरोड।**

अभातेममं के निर्देशानुसार ईरोड तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रतिक्रमण जाने-समझें और करें प्रतिक्रमण, न हो हमसे फिर कोई अतिक्रमण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक ओम भिक्षु जय भिक्षु के जाप से हुआ। तत्पश्चात चौबीसी का संगान किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में मंजु बोहिरा और चंदा डूंगरवाल ने प्रतिक्रमण के बारे में समझाया। अंत में मंत्री पिंकी वैदमूथा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। महिला मंडल की अच्छी उपस्थिति रही।

# जप-तप के साथ भक्तामर अनुष्ठान

**विले पार्ले।**

साध्वी राकेश कुमारीजी के सान्निध्य में तप के साथ भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन अजीत सोहनलाल धाकड़ के घर पर हुआ। इस अनुष्ठान में लगभग ३० दंपति जोड़ों सहित १५० से ज्यादा व्यक्तियों ने सहभागिता दर्ज करवाई।

साध्वी राकेश कुमारी जी एवं साध्वी विपुलयशा जी ने रिद्धि के साथ भक्तामर अनुष्ठान संपन्न किया। कन्या मंडल से यशा डागलिया ने भक्तामर का मंत्र एवं श्लोकों की सुंदर पीपीटी बनाई, प्रोजेक्टर द्वारा अनुष्ठान सभी को दिखाया गया।

# संयममय क्रिया होती है कल्याणकारी : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, १७ अगस्त, २०२२**

वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि लगभग ढाई हजार वर्ष से अधिक समय पहले भगवान महावीर इस भरत क्षेत्र में विराजमान थे, विचरण कर रहे थे। एक बार वे कमंजला नगरी के परिपार्श्व में पधारते हैं। वहाँ छत्रपलाशक नामक चैत्य था, वहाँ पधारकर अपने प्रवास योग्य स्थान की अनुमति लेते हैं। अनुमति लेकर वहाँ संयम और तप से भावित करते रह रहे हैं।

साधु के जीवन व्यवहार में भी संयम होना चाहिए। बोलने, चलने, सोचने, खाने में हर क्रिया में संयम जुड़ा होना चाहिए। जो संयम है, सर्व विरति है, शुभ योग में है तो उसका हर शुभ योग तप होता है। साधु यथा विधि विहार करता है, वह भी तप है। स्वाध्याय करना, तत्त्वज्ञान बताना भी तप है, यह उसके लिए कल्याणकारी है।

भगवान को सुनने के लिए प्रजा भी आ रही है। वे महाप्रवचनकार थे। भगवान के बारे में आगम में आता है कि भगवान नगरी के बाहर प्रवास करते थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सन् २००२ के अहमदाबाद चतुर्मास के समय भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के प्रसंग को समझाया। धर्म मुख्य है, संप्रदाय गौण है, वैसे ही राष्ट्रहित मुख्य है, पार्टी गौण है। ज्ञानी महात्मा अच्छी शिक्षाएँ दे सकते हैं।

कमंजला नगरी से कुछ दूरी पर एक और नगरी थी, जिसका नाम था श्रावस्ती नगरी। उस नगरी में एक परिव्राजक-साधक स्कंधक था वह विद्वान-पारगामी था। कई विधाओं का निष्णात था। विद्वान वह होता है, जिसका ज्ञान के प्रति समर्पण, आकर्षण हो। प्रतिभा और पुरुषार्थ भी हो। एक और व्यक्ति तिंगल नाम का था वह एक बार स्कंधक के पास गया। वह वैशालिक श्रावक था, उसने स्कंधक के सामने जिज्ञासा रखी, प्रश्न रखे।

पहला प्रश्न था लोक शांत है अथवा अनंत है। दूसरा—जीव शांत है या अनंत है। तीसरा—सिद्धि शांत है अथवा अनंत है। चौथा सिद्ध शांत है अथवा अनंत है। पाँचवाँ किस मरण से मरता हुआ जीव बढ़ता है अथवा घटता है। इन पाँच प्रश्नों को तिंगल ने स्कंध से पूछा और उत्तर माँगा। इन प्रश्नों से स्कंधक थोड़ा शंकित हो जाता है। इन प्रश्नों का उत्तर देने में अपने आपको असमर्थ समझता है।

तिंगल ने उत्तर न मिलने पर दोबारा, तिबारा स्कंधक से प्रश्नों के उत्तर पूछे। स्कंधक उत्तर दे नहीं पा रहा है। तिंगल ने सोचा ये उत्तर नहीं दे पा रहे हैं, मुझे इन प्रश्नों का उत्तर कहाँ मिलेगा। उसने चर्चा सुन रखी थी भगवान महावीर आए हुए हैं। किमंजला नगरी में प्रवास कर रहे हैं। एक उनका वचन सुनना भी फलदायक होता है। कितना अच्छा होगा ऐसे व्यक्ति से अर्थ ग्रहण किया जाए।

स्कंधक ने भी जाना कि महापुरुष आए हुए हैं। अनेक धर्म के लोग आपस में मिलते हैं। तिंगल के दार्शनिक प्रश्नों का जवाब नहीं दे सका था। दोनों भगवान महावीर के पास जाने का चिंतन करते हैं।

**तपस्या के प्रत्याख्यान**

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि शांति कौन प्राप्त करता है। जो कामनाओं को छोड़ देता है, वह व्यक्ति शांति को प्राप्त करता है। जो निष्क्रिय होता, ममकार से रहित होता है, वह व्यक्ति शांति को प्राप्त करता है। ममत्व के कारण लोग दुःखी बनते हैं। ममत्व व्यक्ति या वस्तु पर होता है। जहाँ मेरापन है, वहाँ ममत्व है।

साध्वी सुषमा कुमारी जी ने नवरंगी तप की प्रेरणा दी। जप की भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि विनम्रता से मृदुता आती है।

# दायित्व बोध प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

**गुवाहाटी।**

समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पूर्वांचल स्तरीय दायित्व बोध प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन तुलसी ग्रैंड (एटीएमआरएफ), गरल, धारापुर, गुवाहाटी में हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा की गई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री अनंत बागरेचा सहित पूर्वांचल के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे अभातेयुप परिवार के सदस्य एवं पूर्वांचल की २७ परिषदों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यशाला का शुभारंभ समणी निर्देशिका द्वारा नमस्कार महामंत्र के पाठ से हुआ, गुवाहाटी परिषद के कार्यकारिणी सदस्य विनीत चंडालिया एवं उनकी टीम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप गुवाहाटी के अध्यक्ष मनीष कुमार सिंघी, तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, एटीएमआरएफ के अध्यक्ष विजय सिंह डागा, महिला मंडल एवं अणुव्रत समिति के पदाधिकारी द्वारा अभातेयुप पदाधिकारीगण का सम्मान किया गया।

अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपना-अपना वक्तव्य व्यक्त किया। समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी ने सभी को दायित्व बोध करवाते हुए सभी युवा शक्ति को समय का महत्त्व बताया।

कार्यक्रम का द्वितीय सत्र प्रारंभ जैन संस्कार विधि के राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन के वक्तव्य से हुआ। तत्पश्चात नेत्रदान के सह-प्रभारी सुनील दुगड़ ने अपना वक्तव्य रखा। साथ ही अभातेयुप के सहमंत्री-प्रथम अनंत बागरेचा ने संगठन एवं संस्कार के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उपाध्यक्ष-प्रथम रमेश डागा ने सेवा के प्रकल्प की जानकारी देते हुए उन्होंने युवावाहिनी और चौका सत्कार से ज्यादा-से-ज्यादा युवा साथी व परिषद जुड़े, ऐसा आह्वान सभी से किया।

अध्यक्ष पंकज डागा ने समय की उपयोगिता एवं अपने संघ, संघपति एवं संगठन के प्रति हमारा क्या दायित्व है। उनके बारे में युवा साथियों को प्रेरणादायी वक्तव्य दिया। महामंत्री पवन मांडोत ने उपस्थित सभी परिषदों के सदस्यों को एमबीडीडी के पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से जानकारी देते हुए संगठन के संविधान के बारे में कई रोचक जानकारियाँ प्रश्नोत्तर के माध्यम से युवा साथियों को दी।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में जिज्ञासा समाधान एवं ग्रुप डिस्कशन आयोजित की गई। कार्यक्रम का संचालन परिषद के मंत्री विकास झाबक ने किया।

# पर्यावरण ड्राइव का आगाज

**साउथ हावड़ा।**

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल ने अपने अभियान पर्यावरण ड्राइव का आगाज स्वतंत्रता दिवस पर किया। इसलिए सभी किशोरों ने पूरे वर्ष यह अभियान चलाने का लक्ष्य रखा। इस अभियान में किशोर हर घर पहुँचेंगे और सभी से एक फार्म भरने का अनुरोध करेंगे। जिसमें नो यूज ऑफ प्लासिटक, पानी की बचत करना, खाना जूठा न छोड़ें, पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें, अपने घर एवं देश को स्वच्छ बनाएँ, आदि इन सभी चीजों से पर्यावरण के प्रति किशोरों की भावना सभी को अच्छी लगी।

परिषद के अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने सभी किशोरों को प्रेरणा दी। संगठन मंत्री रोहित बैद, किशोर मंडल के संयोजक संजोग पारख सहित पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। एक ही दिन में किशोरों ने लगभग ५० फार्म लोगों के स्वेच्छा से भरवाए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 अगस्त - 4 सितंबर, 2022



✦ *धार्मिक व्यक्ति अपने जीवन में अनासक्त योग की साधना करे।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# अपने कषायों को शांत रखना भी बड़ी साधना है : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, १६ अगस्त, २०२२**

मोक्ष प्राप्ति की कामना इच्छुक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के दूसरे अध्ययन के दूसरे शतक में प्रश्न किया गया कि भंते! समुद्घात कितने प्रज्ञप्त हैं?

समुद्घात क्या है? आत्मा या जीव शरीर में रहता है। कुछ विशेष स्थितियों में जो आत्मा के अवयव-प्रदेश हैं, आत्म प्रदेश हैं, वे शरीर से बाहर भी निकलते हैं। जीव अपने आत्म-प्रदेशों का प्रक्षेपण करता है। उस क्रिया का नाम है—समुद्घात।

प्रश्न है कि कित-किन परिस्थितियों में वे प्रदेश बाहर निकलते हैं? समुद्घात के सात प्रकार बताए गए हैं। पहला है—वेदना समुद्घात, जब जीव वेदना के अनुभव में परिणत होता है, उसके साथ एकाकी भाव स्थापित कर लेता है तो वो वेदनीय कर्म की उदीरणा कर लेता है, भविष्य में जो वेदनीय कर्म भोगने हैं, उनको पहले ही खींच के ले आता है। उदीरणा कर उन्हीं में उदय में लाकर उनका निर्जरण भी करता है, वो वेदना की स्थिति में वो आत्मा के प्रदेश कई बार बाहर निकल जाते हैं, वो वेदना समुद्घात है।

कई बार शरीर के किसी अंग में वेदना हो जाती है। ये वेदना जो होती है, वो हमारे पुराने पाप कर्म का फल है। वेदना में हम शांति-समता रखें वो अच्छा है। समता रखना धर्म की दृष्टि से भी अच्छी बात है, निर्जरा होती है। बाह्य चिकित्सा के साथ आध्यात्मिक चिकित्सा के रूप में कायोत्सर्ग, मंत्र का जाप आदि हो। दवाई के साथ आध्यात्मिक चिकित्सा भी काम कर सकती है। प्राणायाम-अनुप्रेक्षा भी साथ में चलती रहे। समता रखना महाफल है।

दूसरा है—कषाय समुद्घात। जब क्रोध, मान, माया, लोभ इनमें आत्मा परिणत हो जाती है, ऐसे कषाय के समय कभी आत्मा के प्रदेश बाहर निकल सकते हैं। पहले वह शरीर का जो पोला भाग है, उसको भर देता है, बाद में उनको बाहर निकाल देता है। इस तरह वो कषाय का निर्जरण करता है। यह कषाय समुद्घात है। बड़ी साधना तो यह है कि हमारा कषाय शांत रहे। समता-वीतरागता में रहे। कषायमुक्ति ही मुक्ति का आधार है।

तीसरा है—मारणान्तिक समुद्घात। ये मृत्यु से थोड़ा पहले होता है। जब प्राणी का आयुष्य अंतर्मुहूर्त अवशेष रहता है, उस समय मारणान्तिक समुद्घात होती है, पर सभी के नहीं होती है। अंतिम समय में जब

बहुत कष्टमय स्थिति प्राणी की बन जाती है, तो उस समय आत्मा के प्रदेश बाहर निकलते हैं। कई बार वो आत्मप्रदेश अगले जन्म में जहाँ जाना है, वहाँ तक चले जाते हैं। कई बार वो वहाँ जाकर वापस लौट आते हैं। शायद आदमी एक बार मरकर वापस जिंदा हो जाता है। कई एक बार मारणान्तिक समुद्घात करते हैं, पर मरकर वापस जिंदा होने वाले दो बार भी मारणान्तिक समुद्घात कर लेते हैं, या हो सकता है।

चौथा है—वैक्रिय समुद्घात। इस समुद्घात में विविध क्रिया, रूप निर्माण कर लिया जाता है। जीव अपना नया-नया रूप बना लेता है, वह वैक्रिय समुद्घात हो जाता है। जैसे स्थूलिभद्र की बात है। कई बार इसमें मंडप या प्रासाद का निर्माण भी किया जा सकता है।

पाँचवीं है—तेजस समुद्घात। जिसके पास तेजोलब्धि होती है वो अपने आत्म-प्रदेशों को बाहर प्रक्षिप्त कर देता है। संख्यात योजन लंबे दंड का निर्माण कर लेता है। तेजोलेश्या दो प्रकार की होती है—कृष्ण लेश्या और शीतल लेश्या। किसी पर अनुग्रह भी किया जा सकता है तो कभी निग्रह भी किया जा सकता है। परमाणु शक्ति के दो उपयोग हैं—इनसे अच्छा निर्माणात्मक काम भी किया जा सकता है, तो विध्वंस भी किया जा सकता है। इसी प्रकार तेजोलब्धि से निर्माण और विध्वंस दोनों हो सकते हैं। जैसे गोशालक पर किसी ने तेजो लेश्या का उपयोग किया तो उसके विरुद्ध में भगवान ने उस पर शीतल लेश्या का उपयोग कर उसे बचाया।

छठा प्रकार है—आहारक समुद्घात। आहारक भी एक लब्धि होती है। वो साधु अपने आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालता है। वह इसका प्रयोग संदेह निवारण के लिए करता है। चतुर्दशपूर्व धारक साधु अनंत गहन विषय में संदेह हो गया तो वह आहारक शरीर के रूप में पुतला निकालकर केवलज्ञानी के पास जाकर प्रश्न का उत्तर वापस लेकर उस साधु के शरीर में समाविष्ट हो जाता है।

सातवीं है—केवली समुद्घात। केवली समुद्घात तीर्थंकर के नहीं होती है, यह सामान्य केवली के हो सकती है, कारण ये करने की चीज नहीं है, अपने आप होती है। केवलज्ञानी है, उसे मोक्ष में जाना है, आयुष्य तो थोड़ा रह गया है, कर्म अभी ज्यादा है। थोड़े आयुष्य में शेष तीन कर्मों को भोगने के लिए वह सामंजस्य बिठाने के लिए, कर्मों को बराबर बैठाने के लिए केवली समुद्घात होता है।

यह प्रक्रिया पूरी आठ समय की है। वो कर्मों को उतने में समय में भोगकर आयुष्य संपन्न होने पर मोक्ष चला जाता है। केवल अंतर्मुहूर्त आयुष्य होता है, तब केवली समुद्घात होती है। ये समुद्घात एक विशेष प्रक्रिया है, जिससे आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं।

कालू यशोविलास का महामनीषी ने विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्यश्री द्वारा हांसी में दो दीक्षाएँ हो रही हैं। भिवानी में चातुर्मासिक प्रवेश हो रहा है। अच्छा ठाट-बाट लगा है। महात्मा गांधी उस समय भिवानी आए हुए थे। पूज्य कालूगणी से मिलना चाहते थे, पर मिलना नहीं हो सका। जैन-जैनेतरों से भी संपर्क हो रहा है। धर्म का मेला लगा है। कार्तिक महीने में दीक्षा समारोह आयोजन का फरमाते हैं। दीक्षा को लेकर भिवानी में विरोध हो रहा है। प्रतिपक्ष द्वारा आंदोलन किया जा रहा है। भिवानी के प्रसिद्ध श्रावक द्वारकादास मगन मुनिजी से इस विषय में वार्ता करते हैं। मगन मुनिजी बोले हम तो दीक्षा कहीं दे देंगे पर हमारे जाने के बाद में तुम्हारा वर्चस्व नहीं रहेगा। तुम्हें तो भिवानी ही रहना है। द्वारकादास सजग हो जाते हैं। डंके की चोट दीक्षा करवाने का सोच लेते हैं। तेरापंथ समाज और विरोधियों दोनों में जोश है, संघर्ष की बात है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

❑ अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की प्रति डाक द्वारा निःशुल्क मँगवाने के लिए अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी इस नंबर 9480048066 पर व्हाट्सएप करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए एवं पी0डी0एफ0 डाउनलोड करने के लिए www.terapanthtimes.com पर लॉग इन करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स में संघीय समाचार प्रकाशन हेतु abtyptt@gmail.com पर मेल करें।

## अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद
## वर्ष 2022 : अलंकरण एवं पुरस्कारों की घोषणा

**युवा गौरव**

**श्री संजय जैन**
**फतेहाबाद**

**आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार**

**श्री राजीव सुराणा**
**उदयपुर**

**आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार**

**श्री देवेन्द्र डागलिया**
**मुम्बई**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**